भूमिका

श्रीसीतारामजी की अहैतुकी अनुकम्पा से "झूलन विहार पदावली" का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया। इस संस्करण में पूर्व संस्करण की अपेक्षा सैकड़ों अप्राप्य नवीन पद दिये गये हैं साथ हीं अकारादि क्रम से पदों की सूची भी दे दी गई है जिससे पदों को ढूँढ़ने में प्रेमियों को सुविधा हो।

श्रीसीतारामजी की मधुर उपासना में आचार्य प्रणीत पदों का सर्वोत्कृष्ट स्थान है। रसिकाचार्योंने उपासना के द्वारा श्रीप्रिया प्रियतम का साक्षात्कार किया था। साक्षात्कार के पश्चात् ही पदों की रचनायें की गई हैं। इन पदों के गायन से प्रेमियों को एक अलौकिक मधुर रस की अनुभूति होती है।

इन पदों में लीला माधुर्य एवं रूपमाधुर्य का सम्यक् चित्रण है कहीं मानलीला, कहीं मिलन, इस प्रकार नित्य निकुञ्ज में विहार का पूर्ण संकेत इन पदों में मिलते हैं। इनके गायन से नित्य विहार की मधुरलीलाओं का रसास्वादन प्राप्त होता है।

श्री रसिक प्रकाश भक्तमाल में भक्ति के चौंसठ भेद कहे गये हैं। जिनमें आचार्य रचित प्रबन्धों का गान प्रमुख भक्ति है-

"अग्रस्वामि आदि के प्रबन्धगान समय सम,
स्वयं नृत्य गान संध्यावन्दन ज्यों कीजिये।"

सन्ध्यावन्दन की भांति नित्य नियम से इन पदों का गायन करना चाहिये। जिस प्रकार सन्ध्यावन्दन नहीं करने पर द्विज अपने धर्म से च्युत हो जाते हैं, उसी प्रकार रसिकजन यदि इन पदों का गायन नहीं करते हैं तो रसोपासना से च्युत हो

जाते हैं अतः नित्य आचार्य प्रणीत पद-प्रबन्धों का गायन अवश्य करना चाहिये।

श्री अवध मिथिला में एवं अन्य स्थानों में प्रतिवर्ष अनेकों उत्सव होते हैं। इन उत्सवों में आचार्य प्रणीत पदों के गायन बड़े अनुराग के साथ किये जाते है। आचार्यों की दिव्यवाणी हीं इन उत्सवों के प्राण हैं अतः इन पदों का महत्त्व वेदों से भी बढ़कर है। श्रीमैथिलीशरणजी शास्त्री ने अनेकों पदों की पुस्तकें प्रकाशित की है। आजतक जिन पदों का श्रवण नहीं हुआ था उन पदों का दर्शन पुस्तक में होता है। अशुद्ध पदों को शुद्ध किया गया है तथा अप्राप्य पदों का उत्कृष्ट संग्रह किया गया है।

सभी उत्सवों में झूलनोत्सव का महत्व सर्वाधिक है। यह उत्सव पूरे श्रावणमास तक चलता है झूलन विहार पदावली का प्रथम संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गया। बड़े परिश्रम से शास्त्रीजी ने नवीन संस्करण का प्रकाशन किया है। इस संस्करण में नवीन पदों की संख्या भी बढ़ाई गई है आशा है प्रेमियों को इन पदों के गायन से श्रीयुगलमाधुरी का रसास्वादन प्राप्त होगा।

विवाह पञ्चमी
सं० २०२३

स्वामी सीतारामशरण
आचार्य पीठ, श्रीलक्ष्मणकिला
श्रीअयोध्याजी

दो शब्द

श्रीमिथिलेशराजकिशोरीजू की असीम अनुकम्पा से "श्री झूलन विहार पदावली" का संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण रसिक सन्तों की सेवा में सादर समर्पित कर रहा हूँ। प्रथम संस्करण में कुछ अशुद्धि रह गई उसे शुद्ध करने का प्रयास किया गया है। प्रथम संस्करण में झूला के अतिरिक्त जल विहार, साँझी, विजयादशमी एवं रासोत्सव के भी पदों का संकलन था, जिससे झूला के पदों का पूर्ण रसास्वादन नहीं हो पाता था, इसलिये इसमें केवल झूला के ३०० पद एवं परिशिष्ट भाग में ३५ कवित्त एवं ६ सवैया भी देकर ग्रन्थ को पूर्ण कर दिया गया है। यदि और भी उत्सव के पदों का संकलन होता तो ग्रन्थ विस्तार हो जाता, अतः केवल झूलन के पदों को ही रखा गया है।

इसमें संवत् के अनुसार श्रीअग्रस्वामीजी से लेकर अब तक के सिद्ध सन्तों की वाणी को संकलन करने का प्रयास किया है। षट् ऋतु के अन्तर्गत सबसे अधिक सभी सन्तों के झूलन के ही पद अधिक हैं जिससे सभी पदों को मैं नहीं दे सका। श्रीलक्ष्मणकिला के 'सरस्वती पुस्तक भंडार' से पदों को संकलन किया है। कुछ पद श्रीशत्रुहनशरणजी महाराज (विरौलीवाले) से मिला है। अतः उनके हम कृतज्ञ है। अधिक दुर्लभ एवं मनोहर पद पं० श्रीश्यामवल्लभाशरणजी से प्राप्त हुआ है, जो कि काशी आकर स्वतः दे गये थे अतः उनके हम हृदय से आभारी हैं। प्रेस जाने आने एवं प्रूफ संशोधन कार्य में पं० नन्दराम शर्मा का योगदान सराहनीय रहा है।

प्रूफ के संशोधन में काफी सतर्कता रक्खी गई है फिर भी यदि कुछ त्रुटि रह गई हो तो विज्ञ पाठकों से क्षमा चाहूँगा।

श्रीलक्ष्मणकिलाधीश
स्वामी श्रीसीतारामशरणजी महाराज
के चरण चञ्चरीक
मैथिलीशरण शास्त्री

विवाह पंचमी
१७।१२।६६

झूलन झाँकी



चलि झूलें विमल हिंडोर गले भुज गेरी ।
पिय लगो सावन मास आस यह मेरी ।।

अकारादि क्रम से पद-सूची

'त'

'द'

'ध'

'न'

'प'

'भ'

श्री सीतारामाभ्यां नमः
श्री मते रामानन्दाचार्याय नमः
श्री मते युगलानन्यशरणाय नमः

श्री झूलन विहार पदावली

श्रीअग्रअलीजी–पद १

जनकपुर लागत तीज सुहाई ॥
रंग रंगोली अतिहिं छवीलो सब मिलि झूलन आई ।
सावन मनभावन पिय प्यारो अवनी सहज सुहाई ॥
पावन कुंज पुंज सुख वरषत करषत मन बरषाई ।
कंचनखम्भ जड़ित डांड़ी नग विविध विचित्र बनाई ॥
रेशम डोरि कोरि बनिआई चहुँदिशि जलज जड़ाई ।
लाले बाल लाल रंग भीनी लालन लाल लड़ाई ॥
[illegible] प्यारी कर गहिकै मंगल गाइ चढ़ाई ।
चारुशिला पिय नैन इसारन झूलन प्रथम सिखाई ॥
झोंका देत लेत सुख पिय को मन्द मन्द मुसुकाई ।
लालहिं पाग लाल शिर चूनरि लाली अति मनभाई ॥
उमगेउ रंग अनंग परस्पर मैन मलार जमाई ।
गावहिं समर रंग भरि भामिनि कोकिल कण्ठ लजाई ॥

ठाकुर हमरे राम मनमोहन अंगन रूप लुनाई।
ठकुराइनि मिथिलेश लाड़िली शील सनेह भलाई॥
होड़ा होड़ी मच्यो है हिंडोला शोभा कहि न सिराई।
'अग्रअली' प्रिय दम्पति झूलत जनकलली रघुराई॥

पद २

हिंडोले झूलति सिय महरानो।
श्रुतिकीरति उर्मिला माण्डवी चारुशिला गुणखानी॥
रच्यो हिंडोरा नाम लिवावति चतुर सखी मुसुकानी।
सियाजू सकुचि रही नहिं बोलति 'अग्रअली' मनमानी॥

पद ३

झूलत सीताराम हिंडोरे।
श्याम गौर अभिराम मनोहर रतिपति के चितचोरे॥
नील पीत वर वसन लसत तन उठत सुगन्ध झकोरे।
सहचरि हरषि झुलावहिं गावहिं छवि निरखति तृन तोरे॥
मन्द मन्द मुसुकात छवीलो रमकन थोरे थोरे।
अति सुकुमारि 'अग्र' की स्वामिनि डरपि गहति पट छोरे।

पद ४

झूलत सिया राजिवनैन।
रतन जड़ित हिंडोलना सखि राम सुख के ऐन॥
श्याम अंग पर गौर झलकत दामिनो घन गैन।
मैथिली रघुवीर शोभा निरखि लज्जित मैन॥
नाम पिय को लेहु नागरि ज्यों सखिन मन चैन।

जानकी नहिं लेति मुख सों देति लोचन सैन ॥
परस्पर झूलत झुलावत बदत मधुरे वैन ।
अवधपुर नित केलि दम्पति 'अग्र' आनन्द दैन ॥

पद ५

झूलत राम राजिव नैन ।
जनकजा सनमुख विराजति तड़ित ज्यों घन गैन ॥
अतिहिं झूलत मनहिं फूलत रसहिं तोषत मैन ।
लाल के उर लागि राजति निकष रेखा ऐन ॥
परस्पर अनुराग दोऊ बदत मधुरे वैन ।
जाल रन्ध्रनि निरखि वनिता 'अग्र' उर सुख दैन ।

पद ६

सियाप्यारी अति सुकुमारी हिंडोलना में कांई झूलो राज ॥
अगर चन्दन को बन्यो हिंडोरा मलयागिर को पटा ।
रेशम डोरि पवन पुरवैया वह सावन की घटा ॥
प्यारी झूलैं लाल झुलावैं भली बनी सजनी ।
उड़ि उड़ि अँचरा परत भुजन पर डरपति शशि वदनी ॥
विपिन प्रमोद लता कुंजन में श्रीसरयू के तटा ।
सिय प्यारी के झूलना वे निरखति 'अग्र' छटा ॥

पद ७

देखो झूलत राघो डोल ।
जनकसुता लीन्हें संग शोभित गौर श्याम तन लोल ॥
हीरा पन्ना लाल पिरोजा रतन खचित बेमोल ।

क्रीड़त राम जानकी दोऊ बजत दुन्दुभी ढोल ॥
हँसत परस्पर प्रीतम प्यारी आनन्द बढ़ेऊ सचोल ।
'अग्रअली' सुन सुनि सुख पावत बोलत मीठी बोल ॥

पद ८

ए दोउ झूलत रंग हिंडोरे ।
दशरथ सुत अरु जनकनन्दिनी चितवनि में चितचोरे ॥
नान्हि नान्हि बूंद पवन पुरवैया फुहियाँ परत थोरे थोरे ।
हरि हरि भूमि लता झुकि आई सरयू लेत हिलोरे ॥
हयदल पैदल रथदल गजदल कोट बने चहुँओरे ।
उपवन बाग बिहंगम बोले कोकिल मोर चकोरे ॥
बाणी विमल सखी सब गावैं अपनी अपनी ओरे ।
नागरि नाम लिवावैं पिय को सियाजू हँसैं मुख मोरे ॥
बाजा बजन लगे चहुँदिशि ते अधिक सघन घन घोरे ।
'अग्रअली' हरि रूप निहारे चरण कमल करजोरे ॥

पद ९

हिंडोरे कहरत काम करोर ।
लखु री सखी यह शोभा अद्भुत बाढ़त रंग झकोर ॥
तिरहुतनाथसुता सन्मुख लै राजिवनैनन जोर ।
रसिक शिरोमणिश्री रघुनन्दन झूलत अवध किशोर ॥
[illegible] श्री चारुशिलाजू भुज अंशन दुहुँओर ।
अपर समाज चहूँदिशि राजत छाई मृदंग टँकोर ॥
नाचति गान करत पिकवैनी घन दामिनि लखि मोर ।

युगलचन्द आनन्द अमी हित निरखत 'अग्र' चकोर ॥

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी-पद १०

आली री ! राघो के रुचिर हिंडोलना झूलन जैए ॥
फटिक भीति सुचारु चहुँदिशि मंजु मनिमय पौरि ।
गच काँच लखि मन नाच सिखि जनु पाँचसर सु फँसौरि ॥
तोरन वितान पताक चामर धुज सुमन फल घौंरि ।
प्रतिछाँह छवि कवि साखि दै प्रति सों कहैं गुरु हौंरि ॥ १ ॥
मदन जय के खम्भ से रचे खंभ सरल विसाल ।
पाटीर पाटि विचित्र भौंरा बलित बेलिन लाल ॥
डाँड़ो कनक कुंकुम तिलक रेखैं सी मनसिज भाल ।
पटुली पदिक रति हृदय जनु कलधौत कोमल माल ॥ २ ॥
उनये सघन घनघोर मृदु झरि सुखद सावन लाग ।
बगपांति सुर धनु दमक दामिनि हरित भूमि विभाग ॥
दादुर मुदित भरे सरित सर महि उमँग जनु अनुराग ।
पिक मोर मधुप चकोर चातक सोर उपवन बाग ॥ ३ ॥
सो समो देखि सुहावनो नवसत सँवारि सँवारि ।
गुन रूप जोवन सींव सुन्दरि चलीं झुंडनि झारि ॥
हिंडोल साल विलोकि सब अंचल पसारि पसारि ।
लागीं असीसन रामसीतहिं सुख समाज निहारि ॥ ४ ॥
झूलहिं झुलावहिं ओसरिन्ह गावैं सुगौंड मलार ।
मंजीर-नूपुर-वलय-धुनि जनु काम-करतल तार ॥
अति मचत स्रमकन मुखनि बिथुरे चिकुर बिलुलित हार ।

तम तड़ित उडुगन अरुण विधु जनु करत व्योम विहार ॥ ५ ॥
हिय हरषि बरषि प्रसून निरखति विबुध-तिय तृन तूरि ।
आनन्द जल लोचन, मुदित मन, पुलक तन भरिपूरि ॥
सब कहहिं अविचल राज नित कल्यान मंगल भूरि ।
चिरजियौ जानकिनाथ जग 'तुलसी' सजीवनि मूरि ॥ ६ ॥

राग सूहो—पद ११

कोशलपुरी सुहावनी सरि सरजू के तीर ।
भूपावली-मुकुटमनि नृपति जहाँ रघुवीर ॥
पुर नर नारि चतुर अति धरमनिपुन रत-नीति ।
सहज सुभाय सकल उर श्री रघुवर पद प्रीति ॥
श्री रामपदजलजात सबके प्रीति अविरल पावनी ।
जो चहत सुक सनकादि संभु विरंचि मुनि मन भावनी ॥
सबहीं के सुंदर मंदिराजिर राउ रंक न लखि परै ।
नाकेस दुर्लभ भोग लोग करहिं न मन विषयनि हरै ॥१॥
सब ऋतु सुखप्रद सो पुरी पावस अति कमनीय ।
निरखत मनहिं हरत हठि हरित अवनि रमनीय ॥
वीरबहूटि विराजहीं दादुर-धुनि चहुँओर ।
मधुर गरजि घन बरषहीं सुनि सुनि बोलत मोर ॥
बोलत जो चातक मोर कोकिल कीर पारावत घने ।
खग विपुल पाले बालकनि कूजत उड़ात सुहावने ॥
बकराजि राजति गगन हरिधनु तड़ित दिसि दिसि सोहहीं ।
नभ नगर की सोभा अतुल अवलोकि मुनि मन मोहहीं ॥२॥

गृह गृह रचे हिंडोलना महि गच काँच सुढार।
चित्र विचित्र चहूँदिसि परदा फटिक पगार॥
सरल विसाल विराजहीं विद्रुम-खम्भ सुजोर।
चारु पाटि पटी पुरट की झरकत मरकत भौंर॥
मरकत भँवर डाँड़ी कनक मनि-जटित दुति जगमगि रही।
पटुली मनहुँ विधि निपुनता निज प्रगट करि राखी सही॥
बहुरंग लसत वितान मुकुतादाम सहित-मनोहरा।
नव सुमन माल सुगंध लोभे मंजु गुंजत मधुकरा॥३॥
झुंड झुंड झूलन चली गजगामिनि वर नारि।
कुसुंभि चीर तनु सोहहीं भूषन विविध सँवारि॥
पिकवयनी मृगलोचनी सारद ससि सम तुंड।
राम सुजस सब गावहीं सुसुर सु सारँग गुंड॥
सारंग गुंड मलार सोरठ सुहव सुघरनि बाजहीं।
बहु भाँति तान तरंग सुनि गंधर्व किन्नर लाजहीं॥
अति मचत छूटत कुटिल कच छबि अधिक सुंदरि पावहीं।
पट उड़त भूषन खसत हँसि हँसि अपर सखी झुलावहीं॥४॥
फिरि फिरि झूलहिं भामिनी अपनी अपनी बार।
विबुध विमान थकित भये देखत चरित अपार॥
वरषि सुमन हरषहिं उर बरनहिं हरि गुन-गाथ।
पुनि पुनि प्रभुहिं प्रसंसहीं जय जय जानकिनाथ॥
जय जानकीपति विसद कीरति सकल-लोक-मलापहा।

सुरवधू देहिं असीस चिरजिव राम सुख संपति महा ।।
पावस समय कछु अवध वरनत मुनि अघौघ नसावहीं ।
रघुवीर के गुनगन नवल नित 'दासतुलसी' गावहीं ।।५।।

श्रीमानदासजी-पद १२

झूलत नृपति किशोर किशोरी ।

विपिन अशोक सुभग सरयू तट हरित भूमि चहुँओरी ।।
मध्य महामण्डप झूलन को मणिमय सुभग बन्यो री ।
तामधि झूलत प्रीतम प्यारी संग सखीगन कोरी ।।
प्रीतम चारुशिला दिशि राजत [illegible] सिय ओरी ।
शान शृँगार सजे नव नागरि नागर रंग भरोरी ।।
सन्मुख श्रीमैथिली इसारे लीला सखिन कियोरी ।
कमला चन्द्रकलादि रंगीली वीणा मृदंग सज्यो री ।।
कोउ गावति कोउ नृत्यति थिरकत राग मलार सुहोरी ।
अति आनन्द उमंग तरंगन 'मानदास' सुख सोरी ।।

श्रीनारायणाचार्यजी 'मुनीश'-पद १३

झूलैं नवल हिंडोरे, पिय प्यारे संग बनि ठनि श्यामा ।।
रतन जड़ित अति रुचिर हिंडोरा तामें रचना अनेक द्रुम सावन के कुंज बिच, बाजत मृदंग आदि गावति सखी समूह, कोटि काम रति धामा ।। शीतल सुगन्ध मन्द वायु के प्रसङ्ग तहँ, घेरि घेरि आवत बलाहक के वृन्द, नान्हीं नान्हीं बुन्दियन बरसन के समय, छवि अति शोभित सियरामा ।। शीश को नवाय ईश को मनाय कै 'मुनीश'

बार-बार विनय करत करजोरी-जोरी, नृपति किशोर औ किशोरी जू आनन्द रहैं, यह हमार मनकामा ।।

श्रीपर्वतदासजी—पद १४

आली री झूलत राजकुमार ।।

चहुँओर तरुणी मन्द गमनी सज्यो सुभग सिंगार ।
खम्भ रुचिर कदम्ब के बेलना मयार सुढ़ार ।।
कनक पटुली जड़ित हीरा जड़े सुभग सुनार ।
सहज सहजा झूमि गावैं किंकिणी झनकार ।।
राग साधे विकट गति सुर सप्तताल सम्हार ।
सोहनी आसावरी अरु भैरवी केदार ।।
मालती मल्लार कौशिक कान्हरो असवार ।
बजत मुचंग मृदंग वीणा वेणु अरु कठतार ।।
मेह वरषै रस भरे रस फूल बारम्बार ।
लाल से लपटात प्यारी डरपि अति सुकुमार ।।
छवी युगलकिशोर की लखि लेति अलि वलिहार ।
चिरजिवो 'परवतदास' पति सब जगत प्राण अधार ।।

श्रीकृपासखीजी—पद १५

झोंका दीजै सम्हारि के मोरी सारी न लटके ।
ई सारी मिथिला से आई चाँद सूरज दोउ भटके ।।
सघन कुँज द्रुमडार कँटीलो कहीं छोर जनि अँटके ।
'कृपासखी' इनकी चंचलता नैननि में कछु खटके ।।

श्रीकृपानिवासजी—पद १६

गुमानी झूलन की रितु आई।
सावन सरिस सुहागिनी के सुख साजन संग सुहाई॥
प्यारे प्रीतम प्रेमनगर सौं नीकी वस्तु बिसाई।
पावस पैठ काम कंचन सौं कामिनी करत कमाई॥
स्याम सुरेश भये अब दानी पल-पल घन बरषाई।
संमत मास पपीहा बोलत तिनकी प्यास मिटाई॥
कहत सिया सुन्दर बालम तुम दूर करौ निठुराई।
'कृपानिवास' आस प्यारी की मिलि रसरंग मचाई॥

पद १७

झूलन पधारो जी म्हारो राज।
कारी पीरी घटा घन उमड़ि घुमड़ि आये बिजुली चमकत आज॥
सुनि बानी रससानी प्यारे चले झूलन के काज।
'कृपानिवासअली' की जीवन गरे लाग तजि लाज॥

पद १८

झूलो जी झूलो जी राम रस के हिंडोरे
रस के खंभ रसीली डारी रस के बने हिंडोरे॥
रस रस गावत रस उपजावत रस के बने घनघोरे।
'कृपानिवास' रसीली सखियाँ रस बस करति निहोरे॥

पद १९

रंग मानी जू रंग मानी! थारी रमक झूलन सुखदानी।
श्यामसुन्दर म्हारी छतियाँ धड़कै नैनन बरसत पानी॥

मदन मनोरथ उपजत हिय सों पिय सों सिय बतरानी ।
'कृपानिवासी' हँसि रस सानी रघुवर उर लपटानी ॥

पद २०

धीरा झूलो जी धीरा झूलो ! म्हारी छतियाँ धड़कि कांईं हूलो ।
बार छूटिगै हार टूटिगै गिरिगै अंग दुकूलो ॥
राम रसिक रस सहजक लीजै नाजुकता समतूलो ।
"कृपानिवासी" कहत छबीली छयल मया जनि भूलो ॥

पद २१

तेरी बांकी झुलनि पर वारी रे
झूलन जोर हिया बिच कसकत मानहु हूल कटारी रे ॥
नैन कटाच्छ वान धनु भृकुटी जुलफन जाल सुधारी रे ।
'कृपानिवासी' झुलनि मन लीता रहि गई ठाढ़ि की ठाढ़ी रे ॥

पद २२

झूलत सियावल्लभ लाल ।
लाल कंचन खंभ सुन्दर ललित डांड़ी लाल ॥
लाल भूषण अंग झलकत लसत चीर सु लाल ।
लाल दोउ के वदन सुन्दर अधर बीरी लाल ॥
लाल सखियाँ लाल गावैं सब झुलावैं लाल ।
मोर हंस चकोर कोयल भनत बानी लाल ॥
लाल रीझत लाल ऊपर परस्पर सब लाल ।
'कृपानिवास' सुलाल जोड़ी निरखि नयन निहाल ॥

पद २३

झुलावत राम रसिक पटरानी ।

कर गहि डोर चकोर दृगन करि चितवत चन्द्र लुभानी ॥
नाह नेह को निरखि नागरी नैनन में मुसुकानी ।
'कृपानिवास' विलासिनि प्यारी प्रीतम को रस दानी ॥

पद २४

आज डोल रसिकमणि झूलहीं ।

मणिगन जटित पुरट वर खंभा विशेष मोमति भूलहीं ॥
मिथिलापुर सुरधाम हरन दुति मधु रितु बहुविधि फूलहीं ।
रमणी वृन्द चहूँदिशि राजत पिय प्यारी अनुकूलहीं ॥
जहाँ मणि मुकुट जानकी दुलहिनि राम नवल दिन दूलहीं ।
'कृपानिवास' महा छवि सागर नैन मीन रस कूलहीं ॥

पद २५

सियराम दोऊ वर झूलते ।

गावत तान मान रस होरी विंष्णु रमा कौ तूलते ।
श्रीकमला विमलादि झूलते निरखि हरषि विन शूलते,
'कृपानिवास' अली मन भावन पीवत यह रस मूलते ॥

पद २६

महल पधारो नैना आलस भरे ।

लोचन फेरि हेरि हँसि नागर मनमथ पाँव परे ॥
झमकि चले जनु मदन झूमते सखियन बाँह धरे ।
छूटत छवि की छटा अटा चढ़ि मधुर गान उचरे ॥

बरसत सुमन सुगन्ध फुहारे सेज भवन उघरे ।
'कृपानिवास' श्रीजानकीवल्लभ रैन सैन सु ढरे ॥

श्रीरामसखेजी-पद २७

सखी री सावन आयो राघोजी रच्यो है हिंडोल ।
देखिये तो जाय प्रमोद बन मणिमय जड़ित हिंडोल ॥
सखन सहित तहँ झूलत पहिरे नील रंग चोल ।
'रामसखे' लाल मिलन को हिय बिच मदन कलोल ॥

पद २८

झूलत नवल दशरथ लाल ।
सरयू तीर प्रमोदबन में लिये संग सिय बाल ॥
अरुण मणिमय हेम डांड़ी रतन खंभ विशाल ।
गुही रेशम डोरि मोतिन पटुली जटित प्रवाल ॥
लखि विचित्र हिंडोल विमला नटति दै करताल ।
हेरि हरि मुख देति झोंका परी छवि के जाल ॥
प्रेम बश लखि गही प्रीतम बोलि वचन रसाल ।
'राम सखे' विलोकि या रस को न होत निहाल ॥

श्रीरामचरणदासजी-पद २९

हिंडोले झूलत लाडिली लाल ।
नील सघन पल्लव तरु शोभित जनु वितान घन माल ।
गरजहिं मधुर-मधुर पिय मन लै कोकिल शब्द सुराल ॥
वरषत मेह झरत तरु अमृत बोलत मोरि रसाल ।
श्री सरयू उमगति उज्वल जल लहरि उठत मनो जाल ॥

त्रिविध पवन निन्दक मारुत चल पट फहरात सुलाल।
पद कर भूषण तड़ित नखत शशि निन्दत धनु सुरपाल॥
बहु सखि संग संग झूलत हैं बहुत झुलावति बाल।
गावहिं मधुर लाल मन मोहैं करहिं विविध रस ख्याल॥
मनहुं मदन रति के व्याहन कहँ साजि सकल निज जाल।
लाल विहार देखि बन फूल्यो विसरि गयो सब हाल॥
यह रस रासि रसिक कोइ सखि सोइ निशि दिन रहत निहाल।
'रामचरण' यह छाँड़ि कहै कछु कारिख तेहि मुख भाल॥

पद ३०

हिंडोले झूलत सिया रघुनन्द।
चलु री सखी नैनन फल लीजै देखि देखि दोउ चन्द।
सावन घन घमण्ड झुकि आयो मधुर-मधुर झरि घोरे।
मधुर मधुर मृदंग सहनाई बोलहिं नाचहिं मोरे॥
झूलहिं रघुवर जनकनन्दिनी सखियाँ झुलावहिं जोरे।
झूलहिं झूलि जाहिं सरयू में झुकि-झुकि छुवहिं हिलोरे॥
अति सुन्दर बन बन्यो हिंडोरा संग समाज सब झूलैं।
इत उत झुकि झुकि झूलत हिंडोरे मारहिं गेंदन फूलैं॥
झूलहिं संग झुलावहिं बहु प्रिय मधुर मधुर स्वर गावैं।
'रामचरण' नभ सुरतिय नाचहिं गाय सुमन झरि लावैं॥

पद ३१

हिंडोरे झूलत कौशलचन्द।
बाजहिं बाजन मधुर गान ध्वनि दशों दिशि होत अनन्द॥

सरयू तीर सुभग शृङ्गार बन ललित परन फल फूले।
गुञ्जहिं भ्रमर मधुर स्वर कोकिल बोलहिं पिय अनुकूले ॥
फूलन केर विचित्र हिंडोरा लसत फूलमय डोरी।
फूलन के युग खंभ मनोहर रचि पचि मदन सच्योरी ॥
फूल मुकुट पट लसत राम के फूलन के सिय सारी।
नख शिख लौं फूलन के भूषण दम्पति अंग सँवारी ॥
फूल तरंग उठत सरयू की फूल बरषि घन घानी।
'रामचरण' सखि सब शृङ्गार किये फूल गानमय बानी ॥

श्रीप्रियासखीजी-पद ३२

अब चलु झूलन प्यारे पियरवा, गरजन घुमरन लागे बदरवा।
नान्हीं-नान्हीं बूँद पवन पुरवैया सरयू सरित तहँ लेत लहरवा ॥
रमकि झमकि अलि नाचन लागी बाजन लागे ताल तबरवा।
'प्रियासखी' सब सुरंग बसन रचि रतन जटित तहँ रंग मंदिरवा ॥

पद ३३

झूलन पधारौ जी श्याम सुजान।
अतर चुचाती अलकैं सोहैं हरत मदन कौ सान ॥
रंग महल ते निकसैं दोऊ कोटि उदै जनु भान।
कोउ नाचत कोउ यंत्र बजावत कोउ उचरत मृदु तान ॥
कोउ कर चँवर छत्र कोउ लीन्हें कोउ लिये पानन दान।
'प्रियासखी' भुज अंशन दीन्हें बतियाँ करत लगि कान ॥

पद ३४

झुलन्दा तेरी अंग-अंग माधुरी जोर।

सुरंग पाग मोतिन की कलँगी हँसि बोलनि चितचोर ॥
भृकुटी कुटिल नैन रतनारे हेरनि बंक मरोर ।
'प्रियासखी' दोउ अवधविहारी वलिहारी तृन तोर ॥

पद ३५

री आली झूलत दोउ मनभावन, सुन्दर रूप सोहावन ।
दशरथ सुत अरु जनकनन्दिनी सावन तीज सोहावन ॥
झोंका देत परस्पर दोउ मिलि पियत अधर रस पावन ।
अलक झलक अली मन ललके सुरंग वसन चित चावन ॥
अलि गुन गावति यंत्र बजावति काम तान उपजावन ।
'प्रियासखी' सरयू तट कुंजैं बन प्रमोद सुख दावन ॥

पद ३६

झूलत राजकिशोर री, अलि निरखि दृगन की कोर री ।
दशरथ सुत अरु जनकनन्दिनी अंग-अंग छवि चितचोर री ॥
नान्हि नान्हि बुन्दियन बरसि मेहरवा बिजुरी चमकै जोर री ।
पियजू के भीजै पचरंग पगिया सियजू के वसन निचोर री ॥
वन प्रमोद के ललित लतन में बोलत मोर चकोर री ।
चहुंदिशि अली खड़ी गुन गावैं मेघ मलार मरोर री ॥
नागरि नाम लिवावति पिय कौ सिय जू हँसो मुख मोर री ।
'प्रियासखी' दोउ राज-दुलारे नव जोवन के जोर री ॥

पद ३७

हिंडोरे झूलत सिय सुकुमारी ।
रघुनन्दन मृदु मंजु कंज कर झोंका देत सम्हारी ॥

चन्द वदन पर अलकैं झलकैं मनु नागिन सी कारी।
ललित कपोलन झूमक झलकैं ललकैं लाल निहारी॥
सावन घटा घुमड़ि घन घोरैं कोउ सखि देत मृदंग टंकोरी।
नृत्यत सहजा प्यारी कोउ सखि लेत तान सुखकारी॥
छूटत अतर गुलाब फुहारी 'प्रियासखी' बलिहारी।

श्रीसरयूसखीजी-पद ३८

पिय हमारी झूलन की रितु आई॥
बिजुरी चमकत घन गरजत है पावस खबर जनाई।
दादुर बोलत मोर झिंगारत पपीहा शब्द सुनाई॥
हरी हरी भूमि सुहावन लागत पवन चलत पुरवाई।
रसिक शिरोमनि राजकुँअर वर झूला देउ झुलाई॥
मैं झूलौं था झोंका देउ पिय संग सखी हरषाई।
'सरयूसखी' यह बात सुनी पिय उर आनन्द न समाई॥

पद ३९

झूलन पधारौ अवध विहारी॥
रूप रासि गुन शील उजागरि संग सिया सुकुमारी।
चहुँ दिशि सखी सहेली संग में गावत राग मलारी॥
बिजुरी चमकत घन गरजत है घटा घुमड़ रही कारी।
मनी जटित झूला पर बैठे उर आनन्द अति भारी॥
तरु तमाल संग कनकलता मनो छवि सिंगार मनहारी।
'सरयूसखी' लखि लखि यह शोभा कोटिन रतिपति वारी॥

पद ४०

रंगीले पिया प्यारी दोउ झूलन खरे ।
अंग अंग भूषन सजे मनोहर दोउ गलबांह धरे ।।
अलबेली अलकैं मुख ऊपर चितवन चित्त हरे ।
सूहे वसन चुवत रंग भीनै रतिपति मान हरे ।।
मनिन जटित कंचन के खंभा डांड़ी रतन जरे ।
'सरयूसखी' अलिगन चहुँ गावत उमगत सप्त सुरे ।।

पद ४१

हिंडोले झूलत हैं पिय प्यारी ।।
पीत वरन पीताम्बर पिय कौ नील वरन सिय सारी ।
दिये गलबांह बैठे रंग भीने घन दामिनि अनुहारी ।।
गावत राग मलार मनोहर सखी ठाढ़ी सुकुमारी ।
'सरयूसखी' सिय पिय की छबि पर कोटिन रतिपति वारी।।

पद ४२

सखी सब झूलन को मिल आई ।
अंग अंग भूषन सजे मनोहर लागत परम सुहाई ।।
गजगमनी मृगसावक नयनी शोभानिधि छवि छाई ।
चन्द्रकला कहि राजकुँवर तुम सिय कौ देउ झुलाई ।।
हम झूलैं तुम झोंका देउ पिय रतिपति मान लजाई ।
'सरयूसखी' सिय पिय छवि निरखत आनन्द उर न समाई ।।

पद ४३

तनक तुम धीरे झूलौ लाल ।

डरपत हैं सिया अति सुकुमारी रमक हिंडोरना की चाल ।।
दामिन सो दमकत चहुंदिशि तै शोभित हैं बहु बाल ।
उमड़ि घुमड़ि घन बरसन लागो गावत गीत रसाल ।।
नील पीत पट सोभित दोउ तन मानहुं छवि के जाल ।
नख शिख भूषन सजे मनोहर झलकत मोतिन माल ।।
जरकस पाग पिया सिया सिर सोहत तुर्रा कलँगी हाल ।
सीस चन्द्रिका फूल मनोहर बेंदो शोभित भाल ।।
रंग महल बिच जुगल हिंडोरा शोभा बनी हैं बिसाल ।
'सरयू सखी' सब पुरजन ठाढ़े निरखत होत निहाल ।।

पद ४४

रंगीले तेरी झूलन है अति प्यारी ।।
झूलन झुकन हँसन लालन की चितवन नैन कटारी ।
श्याम गौर दोउ अंग मनोहर रूप राशि उजियारी ।।
कहत सखी तुम धीरे झूलौ डरपत सिया सुकुमारी ।
'सरयूसखी' ये युगल कुँवर पर कोटिन रतिपति वारी ।।

पद ४५

जरा झूलो न लाला हमारे संग ।
तुम प्रीतम हम प्यारी बनो हैं तुम दीपक मेरे नैना पतंग ।।
तुम रसिया हम आली छबीली लागो है नेह पिया तुम्हरे अंग ।
'सरयूसखी' झूलन को निकसी बाजै मृदँग तहँ उठै तरंग ।।

श्रीयुगलप्रियाजी-पद ४६

हिंडोरे झूलैं श्री जानकी जान ।।

युगल प्रकाश कुञ्ज कंचनमय बिपिन प्रमोद लतान।
श्याम बदन पर जुलफै छोड़े मन्द मन्द मुसुक्यान॥
प्यारी संग समाज अलीगन लेत नई नई तान।
'युगलप्रिया' वारत तन मन धन करति निछावरि प्रान॥

पद ४७

रसिक दोउ भूलत सरयू तीर।
रघुनन्दन अरु जनकनन्दिनी श्यामल गौर शरीर॥
राजत छबिमय रतन हिंडोरा तापर बोलत कीर।
गावहिं छबि अवलोकि प्रेम भरि चहुँदिशि सखिन की भीर॥
बाजत बीन मुचंग उपंग मृदंग ताल अति धीर।
'युगलप्रिया' अति सुख बरसत जब लेत तान गंभीर॥

पद ४८

किशोरी संग भूलत नवल किशोर।
दशरथनन्दन जनकनन्दिनी सुन्दर श्यामल गौर॥
सरजू तीर सुखद प्रमोदबन विश्वभूमि शिरमौर।
तामधि मणिमय रचित हिंडोरा लसत हेममय डोर॥
चन्द्रकला सखि हरषि झुलावति विमला ढोरति चौंर।
'युगलप्रिया' यह मधुर केलि लखि सुधिबुधि सब भई भोर॥

पद ४९

पिय सांवरे सलोने भूला भूलो।
जैसी ये रंगभरी सिय प्यारी अलिगन त्यों सम तूलो॥
तैसी ये रंगमहल छबि अद्भुत वन प्रमोद सुख मूलो।

श्रीसरयू मणि जटित घाट दोउ कंज प्रफुल्लित फूलो ॥
सुनत हिंडोर कुंज ढिग आये पिय प्यारी दिल दूलो ।
'युगलप्रिया' के जीवन धन दोउ सदा रहो अनुकूलो ॥

पद ५०

अलि फूलन हिंडोरे झूलैं जनक किशोरी ।
फूलन की चौकी राजैं फूलन की डांड़ी भ्राजै,
फूलन को छतुरी सोहै फूल खंभे डोरी ॥
फूलन के तकिया प्यारो फूलन बिछौना वारो,
पिय अंस भुजधारी राजत जोरी ॥
फूलन सिंगार किये अलिगन लखि जीयें,
गावति सरस राग प्रमुदित गोरी ॥
विपिन प्रमोद बागे फूल कुञ्ज अनुरागे,
'युगलप्रिया' चकित लखि तृन तोरी ॥

पद ५१

सबहिं चलोरी झूला झूलें, श्याम रंग हिंडोरे ॥
सरयूतीर सुखद मणि महलें, अतर गुलाब सुगंधन चहले,
बन प्रमोद चहुँओरे बोलत, कोकिल मोर चकोरे ॥
कंचन खंभ जड़ाऊ राजै, छतुरी डांड़ी अद्भुत भ्राजै,
पटुली रंग विरंग विराजै, निरखतहीं चित चोरे ॥
मन्द मन्द मुसुकावत प्यारे, प्यारी के अंशन भुजधारे,
'युगलप्रिया' करसों करजोरे, रतिपति को मद छोरे ॥

पद ५२

सबहिं झुलावो री हिंडोरे, अलवेली राजकुमारी ॥
सावन तीज सोहावन राजे, विविध भांति के भूषण साजे,
अंगन प्रति कोटिन रति वारिय, प्राण करौं बलिहारी ॥
कमला विमला चँवर ढुरावै, गान कला सुमृदंग बजावै,
चन्द्रकला कछु तान सुनावै, लाल देत करतारी ॥
सुख समुद्र श्रीजनकदुलारी, रघुनन्दन की प्राण पियारी,
'युगलप्रिया' तन मन धन वारी, वारि वारि डारी ॥

पद ५३

हिंडोरे कुँवर कुँवरि झूलैं। मेरो हियरा लखि फूलैं ॥
अतिहिं सुघर उपमा न पैयत वर भलोइ कहत कवि मति न लहत जहँ चिन्तामणि भूमि द्रुम झूमि झूमि रहि छवि, श्रीसरयूकूलैं ॥ अतिहिं सोहाई माई अवध लोगाइ आई तेहि समता को रति रंचक न पाइ निज, परिकर सम तूलैं ॥ गावैं सु बजावैं अनुराग को बढ़ावैं राग रागिनी जमावैं प्राण प्राणनि रिझावैं लाल चन्द्रकला दिशि हेरि अति सुख पावै, सियप्यारी सुख मूलैं ॥ झूला को लगाई मणि जटित प्रवाल भाई द्रुमन सोहाई पटुली लगाई सुखदाई, रेशम रजु मूलैं ॥ 'युगलप्रिया' झुलाई दंपति रसिकराय झोंका दै मुदित मन सुख न समाई अनुपम छवि छारति काम को लजाई' ये दोउ रसिया दिन दूलैं ॥

पद ५४

दशरथ जू के छैला हो राज झूला झूलो।

तूं तो रंगीला पिया हौं तो रंगीली और रंगीली सखी समतूलो॥

रंगभरी सरयू उमड़ी है रंग विपिन सब फूलो।

'युगलप्रिया'नवरङ्ग साज सब लखि प्रीतम अनुकूलो॥

श्रीजनकराजकिशोरीशरणजी 'रसिकअली'-पद ५५

हिंडोला आज अनोखो रंग।

सावन तीज सुहागिनि सियजू झूलत प्रीतम संग॥

कनकभवन आन्दोलकुंज बिच छाई तान तरंग।

विमला कमला[illegible]कलादिक झोंका देत उमंग॥

सारंगी स्वर मण्डल वीणा झाँझ मृदंग उपंग।

आनंद छाय बजावत अलि बहु कोउ गति लेत सुढंग॥

इत गरजत घन उमड़ि घुमड़ि नभ चमकत दामिनि संग।

'रसिकअली' सिय पिय विलास लखि मोहे रती अनंग॥

राग सोरठ-पद ५६

राज रङ्ग मानो चढ़ि नवल हिँडोरना॥

सावन की तीज आजु रीझि रीझि गावैं अलि,

तान रङ्ग छावैं मृदु मृदङ्ग टकोरना॥

उबटि अन्हाय सोंधो अञ्जन फुलेल पान,

वसन सुरङ्ग मणि भूषण सजोरना॥

इत घन घटा घोर दामिनी दमङ्के जोर,

चहुँदिशि बोले मोर चातक चकोरना॥

विपिन प्रमोद शोभा देखि देखि मन लोभा,

पावस द्रुमन गोभा नव छवि छोरना॥

'रसिकअली' के प्राण प्यारे रघुलाल सिया,
रमक झमक झूलैं हूलैं चित चोरना ॥

राग मल्हार-पद ५७

झूलत रसिकमणि रघुनन्द ।
संग सिय अलवेलि नागरि वदन छवि बहु चन्द ॥
रतन जड़ित हिँडोलना लखि सूर शशि द्युति मन्द ।
'रसिकअलि' अलिगन झुलावत मगन छवि के फन्द ॥

राग-सूहो ठुमरी-पद ५८

हिंडोले आली झूलैं युगल किशोर ॥
पीत नील अम्भोरुह से तनु छवि मकरन्द न थोर ॥
अरस परस रस छके छवीले रति मनमथ चितचोर ।
जनकलली रघुलाल सलोने घन दामिनि द्युति जोर ॥
विपिन प्रमोद मही हरियाई द्रुम फूले चहुँओर ।
बोलत विहँग सोहावने सखि चातक मोर चकोर ॥
तैसेइ सजल जलद नभ छाये बिजुरी चमक चहुँओर ।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन हिय बाढ़त मदन मरोर ॥
छूटे कच कम्पत तन प्यारी प्रीतम रंग झकोर ।
सूहे वसन सुहावने तन मचकन घेरत छोर ॥
नाचत गान करत पिकवयनी छाये मृदंग टँकोर ।
'रसिकअली' लखि युगल रूप रस नहिं लागत दृगकोर ॥

पद ५९

हिंडोले झूलत प्यारो प्यारी ।

नव यौवन गुन रूप नये दोउ रघुवर जनकदुलारी ॥
अरुन वसन वर लसत दोउन तन मनि भूषन छविकारी ।
इत प्यारी की हलत चन्द्रिका पिय कलँगो छवि भारी ॥
मचकैं लेत हिचकि दोउ गति सों पग नूपुर झनकारी ।
गावत अली मलार राग रुचि सोउ गति लेत सुधारी ॥
कनकभवन मुद मंगल शोभा नित उछाह रसकारी ।
'रसिकअली' वारत तन मन धन निरखि निरखि बलिहारी ॥

पद ६०

गावैं रस भरी तान, प्यारो प्यारी को झुलावैं ॥
कनक भवन में कनक हिंडोरा रवि शशि ज्योति लजावैं ।
चहुँदिशि ललित वितान बादले झालरि झुमका सुहावैं ॥
इत घन गरजत रिमिझिमि बरषत मृदु मृदंग धुनि छावैं ।
'रसिकअली' सिय प्रीतम ऊपर वार वार बलि जावैं ॥

श्रीविश्वनाथसिंहजी-पद ६१

हिंडोरे झूलत भरि अनुराग ।
सियजू की भींजत सुरंग चून्दरी सुभग राम शिर पाग ॥
गावत राग मलार परस्पर छवि छहरत बन बाग ।
'विश्वनाथ' छवि निरखत हरषत सरसत सरस सोहाग ॥

श्रीजानकीरसिकशरणजी 'रसमाला' ध्रुपद-६२

आजु री निहारु सखी दम्पति आनन्द भरे,
ललित हिंडोरे झूलैं सोभा सरसाए हैं ।
सुरंग वसन मणि भूषण लसत अंग,

अंगन निहारि रति कामहू लजाए हैं ॥
छूटी अलकावली सु दर्पन से गण्डन पै,
मुखकंज हेरि मानौ भौंर भीर छाए हैं।
वीरन सों लाली मुख बोलत रसाल बैन,
नैन सैन पाइ 'रसमाला" हू झुलाए हैं ॥

पद ६३

झूलत सिय पिय आज हिंडोरे ।
घन गरजत विजुरी अति चमकत बरसत रिमझिम बोलत मोरे ॥
ज्यों ज्यों प्रीतम रमक बढ़ावत सिय डरपत पकरत पट छोरे।
'रसमाला' विमलादि सखी सब नाचत थेइ थेइ बोलत मोरे ॥

पद ६४

हिंडोरे झूलत सिय प्यारी ।
सरयू तीर हिंडोल कुंज बिच सुरतरु को डारी ॥
प्रीतम रमक बढ़ावत गावत करि अलाप चारी।
डरपति लली दसन रस लागहिं हँसति सखी सारी ॥
बैठी पिय भरि अंक लीन सिय बड़े प्रमोद भारी ।
'रसमाला' यह रस विनोद लखि रतिपति बलिहारी ॥

पद ६५

हिंडोरे झूलत युगल किशोर ।
श्याम गौर मनहरन ललन दोउ अंग अंग अलि चितचोर ॥
भूषण वसन सरस रस छवि लखि उमगत जोवन जोर।
चरवत पान परसपर दोऊ निरखत दृग की कोर ॥

हँसि हँसि अली मुदित मन गावहिं झोंका दै दुहुँओर।
'रसमाला' छबि निरखि दुहुन की वारति काम करोर॥

पद ६६

हिंडोरे झूलत राजकुमार।
अंश धरे भुज जनकलली के गावत मेघ मलार॥
बीरी देत ललन हँसि सियमुख निरखत अंग उदार।
तैसेहिं सिया खवावति पिय को निरखि बदन सुखसार॥
सिय के भूषण लाल सँवारत सियजू पिय उरहार।
'रसमाला' दम्पति छवि निरखति ठाढ़ी अली अपार॥

पद ६७

हिंडोरे झूलति जनकलली।
प्रीतम के संग कनक हिंडोरे झोंका देति अली॥
कुसुमी वसन पहिरि मणि भूषण पिय संग लगति भली।
मनहुँ नील पंकज के ढिग एक फूली चम्पकली॥
झूलत आप झुलावत सखियाँ विहँसत छैल छली।
'रसमाला' पिय वदन चन्द छवि निरखत मति न चली।

पद ६८

हिंडोरे झूलत राजिव नैन।
संग लिये सिय को अलबेली बोलत मधुरे बैन
कबहूँ पान खवावत सिय को सिय पिय को सुख दैन।
झोंका लेत निरखि मुख की छवि होत दुहुन मन चैन।
विमलादिक चहुँओर सखी सब झोंका दै सुख दैन।

'रसमाला' मधुरे सुर गावहिं निरखि वदन सुख ऐन ॥

पद ६९

तनक तुम धीरे लाल झुलावो ।
डरपति हैं सुकुमारि किशोरी डोरी मधुर हलावो ॥
रचि बीरी निज करन खवावो शीतल विजन डुलावो ।
अपने नैन चकोरन सियमुख इन्दु सुधा छवि प्यावो ॥
सोरठ गौंड मलार सोहावन मधुर सुरन कछु गावो ।
'रसमाला' तुमहूँ संग झूलो नैना सफल करावो ॥

पद ७०

हिंडोरे झूलत सिय रघुवीर ।
श्याम गौर अभिराम राम सिय संग सखिन की भीर ॥
अंग अंग भूषण सजे मनोहर पहिरे नूतन चीर ।
चर्वत पान हँसनि चितवनि लखि उठति मनोभव पीर ॥
गावहिं गीत अली विमलादिक झोंका दै अति धीर ।
'रसमाला' दम्पति छवि ऊपर वारिय तन मन हीर ॥

पद ७१

रंग भीने पिया प्यारी दोउ झूलत हिंडोर ।
सब सखियाँ झुलावैं गावैं लखि तृण तोर ॥
उत पगिया जड़ाउ शिर कलँगी सजोर ।
इत चन्द्रिका झुकी है थिर दामिनी उजोर ॥
सोहैं मोतिन की माल उर बसन उजोर ।
कल कानन कुंडल जुलफन की मरोर ॥

मुख पान की ललाई छाई दशन उजोर।
मन हरन बुलाक नक बेशरि हिलोर॥
दोउ करत परस्पर बतियां न थोर।
नेह भरी प्यारी चितवनि लखित किशोर॥
घन मधुर मधुर धुनि गरजत घोर।
चलती है पुरवाई वरषत थोर थोर॥
द्रुम बोलत पपीहा पिक करती है सोर।
इत सरयू उमड़ि तैसी लेति हैं हिलोर॥
दोउ आनन्द के कंद रहे झूलते बहोर।
हँसि हँसि निरखत 'रसमालिका' की ओर॥

श्रीदम्पतिअलीजी—पद ७२

झूलत सियवर राज हमारे।
अंशन बांह परसपर धारे, झनन झनन नूपुर झनकारे॥
शिरन क्रीट चन्द्रिका संवारे, कोटि भानु शशि निन्दनिहारे।
मुक्तामाल गले बिच धारे, घन दामिनि बिच दमकत तारे॥
श्याम गौर छवि अमित अपारे, नील पीत अम्बरन सँवारे।
कुण्डल श्रवन झूमका न्यारे, छूटे अलक बदन सुकुमारे॥
गरजत वरषत बूंद फुहारे, पपिहा पिउ पिउ करत पुकारे।
झोंका देत अलीगन सारे, 'अलिदम्पति' मन मोद अपारे॥

श्रीकाष्ठजिह्वास्वामी 'देव' पद ७३

श्रीसियजू की समता पावन का चाहसि द्वै दिन के सावन॥
नित करुणा रस धारा वरषति सिय हिय ताप नसावन।

तूं ऊपर को ताप नशावै सोउ कबहूँ तरसावन ॥
पंक बढ़ावन तूँ सियजू तो जग को पंक बहावन ।
गरजवन्त तूं सिय अलगरजिन जन की गरज पुरावन ॥
तेरे घनश्यामहिं दच्छिन को मारुत प्रबल उड़ावन ।
सियजू के घनश्याम अकम्पन हिय अनुराग बढ़ावन ॥
सिय दामिनि घनश्याम राम जू मिलिकै भये सोहावन ।
'देव' सार अब निसरिहिं जैसे परत दूध में जावन ॥

पद ७३

देखो राम बने जनु सावन, सिय लगी रंग बढ़ावन ॥
सियवर की मोतिन की माला सो वग पाँति लजावन ।
इन्द्रधनुष सिन्दूर सिया को घन रस को बरषावन ॥
पछिलो पौन सो सन्त विचारी श्याम घटा प्रगटावन ।
रवि बिनु कवि बुध मिलिकै लागे रस की झड़ी लगावन ॥
सियजू उत्तर दिशि की दामिनि राम सरूप लखावन ।
चमकि झमकि सो निज दासन के अन्तर जोति जगावन ॥
ब्रह्मदेवहूँ यह सावन को करत निरन्तर ध्यावन ।
सियाराम जू जनम-जनम को जिय की जरनि मिटावन ॥

पद ७५

अवध बाग जस नन्दन तहँ ऊँचो श्रीखण्ड ।
रतन हिंडोला तहँ परयो जामें कंचन दण्ड ॥
जगमग रतन अनेकन बग बग कंचन पीठ ।
नाद विन्दु मण्डल लसै जहँ पहुँचत नहिं दीठ ॥

तापर सियवर राजत जैसे दामिनिवन्त।
दोउ दिशि प्रेम झुलावत साजत सुरत इकन्त॥
राग समय मण्डल बँध्यो झरन लगे रस बूंद।
रोम रोम रस भीनत मिटे ताप दुख द्वन्द॥
दोउ परस्पर अमिय से बनि रहे गर के हार।
सुमनन की वर्षा भई गरजनि की बलिहार॥
वह कंकन वह शिर पटा वह मोतिन की माल।
इन्द्र धनुष मण्डल बन्यो पीत हरित अरु लाल॥
श्रवण पुनर्वसु चौकड़ा नित सावनहिं जनाव।
देखि मोर मन हरषित पहुँची जड़ित जड़ाव॥
या जोड़ी पर वारौं अपने तन मन प्रान।
पूरन मण्डल मचि रह्यो बाजत 'देव' निशान॥

पद ७८

आज दोऊ झूलत रंग भरे, सजि सब साज हरे॥
हरित कुंज घन लता हरी हैं तरुवर हरित फरे।
हरित भूमि नभ हरी हरीमय पंछी हरित चरे॥
हरित हिंडोला हरित बाग में हरित डोर जकरे।
हरित वसन भूषण औ आसन चामर हरित ढरे॥
हरित सखी दोउ ओर झुलावति मेघ राग उचरे।
दोउ किशोर तेहिं मध्य लसत हैं हरित छत्र शिर धरे॥
पीत श्याम आपस में मिलिकै हरित रंग उघरे।

कोयल कीर मोरगन के मिस देखहिं 'देव' खरे ॥

पद ७७

राम हिंडोरे झूलत सियजू की करुणा झलक परी ॥
तिनकी का गति होइहैं जेहि दिशि रघुवर पीठ करी ।
पियहिं सिंगारन के मिस उठि उठि सिय तहँ दीठ धरी ॥
प्रभु ते गिरे फूल दल महि पर सिय लखि मोद भरी ।
महि सरूप में तुम का करिहौ सत्ता रूप खरी ॥
वाम जनहुँ कहँ तारन कारन आप वाम दिशि अरी ।
सुभग सर्वतोभद्रासन पर बैठी सो न टरो ॥
मुक्त भये विरक्त गुन याते मुक्ता परत झरी ।
'देव' दृष्टि से यह रहस्य लखि मति पद मांह ढरी ॥

पद ७८

ललित अति कुंजन की घन घटा । जाहि देखि दुख हटा ॥
जाको रंग नील लहरत नित जस जमुना रस चटा ।
रंग २ के पची बोलैं मोर शोर करि रटा ॥
लता तरुन से लिपटो जहँ तहँ त्रिया निगमनि छटा ।
वेदन ही में तत्त्व रहत जस लखि न परत अटपटा ॥
लली लाल के नित विहार जहँ काहु सुकृत नहिं अटा ।
तीनौं ताप न जाय सकत तहँ मनहुँ उपासन हटा ॥
घन रस बरषत पवन चलत जहँ सुख समाज तहँ ठटा ।
'कुंज देव' सौं प्रेम नहीं तौ धिग भगवा धिग जटा ॥

पद ७९

भले दोउ लालै लाल लसै ।
मानहुँ दोउन के अन्तर के प्रगट राग विकसैं ॥
लाल बाग में लाल डोर से लाल हिंडोले कसैं ।
लाल सखी कर फूल लिये हैं बहुत सुगन्ध बसैं ॥
लाल वसन भूषण औ आसन लाल चँवर हुलसैं ।
लाल लली तेहि मध्य विराजत पान खाय विहँसैं ॥
लाल छत्र मण्डल शिर सोहत दोऊ काम सरसैं ।
रंग लाल की या लाली लखि 'देवन' को मन फँसे ॥

श्रीअवधअलीजी–पद ८०

सजनी झूलत श्यामा श्याम ।
सरयू तीर प्रमोद बन में राम सिया सुख धाम ॥
रतन जटित वर कनक हिंडोला शोभित जग अभिराम ।
सावन श्याम घटा झुकि आई जहँ तहँ दमकत दाम ॥
बोलत मोर चकोर कोकिला चातृक रटत ललाम ।
बजत मृदंग ताल सारंगी सखि गावत गुण ग्राम ॥
[illegible] शुभगाजू झुलावत निर्तत सहजा वाम ।
'अवधअली' प्रिय प्रीतम छवि पर वारिय रति शतकाम ॥

श्री जन तुलसीजी–पद ८१

झूलत दोउ रघुवर रंग भरे ।
दशरथ सुत अरु जनक नन्दिनी कनक भवन पधरे ॥

रतन जड़ित मणि बन्यो है हिंडोरा कंचन खम्भ हरे।
विमलादिक सखि रीझि झुलावैं उर आनन्द भरे॥
युगल रूप की शोभा निरखत रतिपति लाज मरे।
यही पियूष पियत 'जनतुलसी' नयनन ओट करे॥

श्रीयुगलानन्यशरणजी "हेमलता"-पद ८२

रमन ऋतु आई आली॥
चटकोली चूंदरी चारु प्रिय पहिरिए खुशहाली।
चहुँदिशि दमक रही दामिनि दुति गरजन घनमाली॥
श्रीअवधेश ललन झुलवाइये नव झूलन डाली।
'युगलअनन्यअली' बलि जाइये लखि छवि मतवाली॥

पद ८३

सजनी सावन सुख सरसावन॥
कारी रसवारी प्यारी घटा दशदिशि दुति दरसावन।
सोहत सौदामिनी पीत पट छवि फवि हिय हरसावन॥
मधुर मधुर गरजन सुंदर रव उज्वल बन वरसावन।
'युगलअनन्यअली' झूलन निज प्रेम प्यार परसावन॥

पद ८४

सावन सज सखियन मन भावन॥
लोनी लतन तरे झूला हिय हरन सुरति उपजावन।
अरुन अजूब वसन पहिरन पिय प्यारी उर उमगावन॥
झूलन झमकि चमकि चितवनि दृग दम्पति विरह बहावन।

'युगलअनन्य' अली अवली विन दाम विकी लगि दावन ॥

पद ८५

पावस प्रेम प्रगट पुर विमला विमल वहार ॥
श्री सरजू तट सोहन मोहन महल विहार ।
मणिमय झूलन झलकहीं वरसत घन रस सार ॥
बोलत कल कोकिल बन नाचत मोर उदार ।
उठत उछाह सहित तर लहर तरंग अपार ॥
सजि सजि भूषण अंग अंग अरुण वसन हिय हार ।
सखिन समेत सियावर झूलत पगि प्रिय प्यार ॥
गावहिं गीत मधुर धुनि सोरठ सरस मलार ।
सुनि सुनि सुख सरसत दुति दरसत दाम हजार ॥
अवध अनूप रहस सुख सावन सु गुन अगार ।
'युगलअनन्यशरण' नित निरखिय नैन पसार ॥

पद ८६

वरसत घन सुख सरसायो ।
झूलत लली लाल सरयू तट अघट सु रस दरसायो ।
बोलत विहंग सु रंग रंग अनुराग उमंग लसायो ॥
दुति दामिनि भामिनि सु राग सुनि नीरस नेह नसायो ॥
हरित भूमि द्रुम इन्द्र वधुन सह सरस सु हित हरषायो ।
'युगलअनन्यअली' सावन मनभावन पद परसायो ॥

पद ८७

झूलन प्यारी लागे हो सिय श्याम सजन सुखदाई ।

आस पास रस रास सहचरी गावहिं गीत सोहाई ॥
फूल्यो फवित सुमन मनमोहन सोहन विपिनि निकाई।
भूल्यो मदन सवाम सु छवि तकि छकि सुधि बुधि विसराई ॥
उमड़्यो सरस सु घन सुन्दर वर व्योम बून्द बरसाई।
बोलहिं मधुर मरोर मोर रव सब जिय जौक जगाई ॥
श्री सरयू सुचि लहर कहर हर शहर वहर छवि छाई।
'युगलअनन्यअली' झूलन झुकि झांकत सुख न समाई ॥

पद ८८

आई री झूलन की बहारें ।
झुलवाइये सिय श्याम राम घन दाम वरन निज नैन निहारे ॥
बारहमास आस सुन्दर तरु सफल अमल कर विशद विहारे।
चहुँदिशि दमक चमक अनुपम रति श्रीसरयू सुचि लहर हजारे।
कोकिल कोर कपोत सु रव सुनि होत हरष मन मति गति पारे।
'युगलअनन्यअली' अनुछन मुद महा प्रमोद विनोद वहारे ॥

झपताल-पद ८९

ललित ललि लाल अलि झूलने झूलहीं ॥
सरयु तर तीर मणिमहल मोहन मदन,
मध्य परिकर निकर सुकर रुचि हूलहीं ॥
युगल उत्साह चित चाह पंकज कली,
सु ऋतु रवि निरखि हिय हरषि फवि फूलहीं ॥
गान तर तान सुख खान दशदिशि श्रवन,
सुनि सु धुनि 'युग्म सखि' विकी विनु मूलहीं ॥

ख्याल–पद ९०

झूलने लगे लाल लली जू ।
श्री सरयू तर तीर कुंज कमनीय मध्य मुद मोद थली जू ॥
फूली ललित लता गुंजे मधु पीवत मधुप उछाह भली जू ।
विविधि रंग घन सरस सोहावन बरसि रहे रसिकन अवली जू ॥
गावहिं कल कोकिल कलापि सिय श्याम सुयश संग सुभग अली जू ।
'युगलअनन्य' श्याम श्यामा छवि निरखि खिली हिय कंज कली जू॥

पद ९१

सरस सावन सुन्दर सोहैं । झमक झूलत छवि मन मोहै ॥
विपिनि प्रमोद मोद विशद विनोद देत लेत चित चोरि कल कुसुम
सुरंग बोर चहुँओर शोर भौंर मोरहू नचत घनश्याम जलद जोहैं ॥
मधुर मंजीर मन रमन सु वीणा धुनि सुनि सुनि होत हिय हरष
तरषवर बाढ़त न सुधि दोहैं ॥ 'युगलअनन्य' अली अवली
अजूब खूब गावैं गुन ऊब से रहित महबूब दूब दामिनी दमक
चष चमक चपल चारुचित मन मतो पोहैं ॥

पद ९२

आज झुलाइहौं पिय तोको ।
हिय अभिलाष लाष भांतिन से है जीवन धन मोको ॥
चंचलता चातुरी चलन चष चारु चरित अवलोको ।
लैहौं ललित लाह लोयन लखि चखि रति रस दुति दोको ॥
हिलि मिलि हलन ललन लोयन वर सुनि सजिहौं सुख थोको।
'युगलअनन्यअली' निवछावर करि देहौं सब लोको ॥

पद ९३

झूला झूलो रसिक रघुलाल सिया ॥

सुखमा भरी सरी सरयू तट निरखत फूलत सखिन हिया।
उमगत उर उमगावत दोउ मिलि हँसत हँसावत प्राणप्रिया ॥
बोलहिं शकुन सोहावन भावन जनु रतिपति बहु रूप किया।
'युगलअनन्य' ललित झूलन लखि निज जस रस गुन वारि दिया ॥

पद ९४

झूलो झूलो हिंडोले आज रसिक रघुराज लला ॥
सरस समीर सुगंध बहत वर विहरत काम कला।
सघन गगन घन दाम दमक दुति दश दिशि हृदय दला ॥
भाव भरी सहचरी चाह चित चमकति चन्द्रकला।
'युगलअनन्यअली' आलस को औसर कौन भला ॥

पद ९५

आली दृग देखु झूलन छवि प्यारी।

झूलत झमक रमक रस बस वर वल्लभ अवध विहारी ॥
प्राण प्रिया हिय लाय लाड़िलो लोयन लाह लहारी।
पावत परम प्रभा पालन पन तन मन धन बलिहारी ॥
रिझवावहिं रिझवार नेह निधि नाज भरी नव नारी।
'युगलअनन्यअली' दिन दिन मुद मोद उदित उर वारी ॥

पद ९६

साजन झूलन की विमल बहार प्यार सज साजन।
साजन हो झूलिये झमकि हिंडोरे नवल रंग बोरे,

घन घुमड़ि चलत चहुँओर, प्यार सज साजन ॥
साजन हो प्यारी सुरंग अंग सारी छटा अनियारी,
वारी जावो हजारन वारी, प्यार सज साजन ॥
साजन हो गावहिं गीत पुनीत रीति रस केली,
उर उमगि उमगि अलवेली, प्यार सज साजन ॥
साजन हो 'युगलअनन्य' अकेली अली तरसाती,
माती विरह ब्यथा बहु भाँती, प्यार सज साजन ॥

पद ६७

नव नागर नेह नहाये झूलत झूलना हो राज ।
सावन सुमन सनेह सोहावन अंग अंग मनमथ रति उपजावन,
छावन सुछवि बहावन हरदम हूलना हो राज ॥
रूप अनूप प्रभा चहुँओरी, दमकि रही दामिनि दुति गोरी,
थोरी वयस किशोरी कोउ तिल तूलना हो राज ॥
छाये ब्योम सघन घन दरसे सुधा सार बूँदें वर वरसे,
अग जग जीवन हरषे सरयू कूलना हो राज ॥
'श्रीयुगलअनन्यअली' करजोरे छन छन नाजुक नाह निहोरे,
निरखो नैनन कोरे न कबहूँ भूलना हो राज ॥

पद ६८

बदन वर विलशत झूलन बीच ।
कोटि कलाकर कांति निछावर सुधा सहस गुन सींच ॥
दामिनि दाम विशद वामा वर चमकहिं निपट नगीच ।
श्री मिथिलेश सुता सुकुमारी जीवन पलकन बीच ॥

चन्द चकोर मोर घन सम दोउ हो रहे प्रेम बगीच।
'युगलअनन्यअली' झूलन छवि निदरत कवि रवि खीच ॥

पद ९९

झूलें दोउ रसिया झूलन बांकी ॥
पगे परस्पर प्रीति रीति रस बनी अनोखी झांकी।
उघरत मोद मनोरथ पल पल रहत नहीं तिल ढांकी ॥
गावहि गीत सनेह सनी सखी युगल सु छवि छन छांकी।
'युगलअनन्यअली' झूलन लखि चपल चातुरी थाकी ॥

पद १००

झूलत प्यारी झुलावें प्यारो ॥
मधुर मधुर करकंज मंजु गहि रेशम रज्जु सुकुमारो।
नैनन निरखि नवेली विधु मुख मंद हँसनि नृपवारो ॥
मुरझि रहे अंग अंग रंग रस सुरझनि अगम निहारो।
'युगलअनन्यअली' दोउ नेहिन ऊपर सर्वस वारो ॥

पद १०१

झूलें रसिक शिरमौर झूलत रसरासी हो।
बाढ़त विविधि विनोद रहस रति खासी हो ॥
निरखिये नैन नवेली अलो चहुँपासी हो।
होय रही बेहोश प्रेम रस प्यासी हो ॥
लाड़िली लाल लोनाइ लहर ललिताई हो।
फैलि रही दिशि दसहुँ कला कलिताई हो ॥

छैल छबीली जोरी रंग रस बोरी हो।
झूलिये कलप करोरी चाह नहिं थोरी हो॥
'हेमलता' अलि प्यारी युगल करजोरी हो।
मांगत मृदु मुशक्यान मधुर मुख मोरी हो॥

पद १०२

साजन सहित सिय झूले झूमि झूलना।
उपमा के कारण तिलोक तिल तूल ना॥
रही व्योम चपला चमकि घन थूलना।
सखिन समाज सोहें सजे साज फूलना॥
गावें गीत मधुर मलार अनुकूलना।
'युगलअनन्यअली' चाह चित फूलना॥

पद १०३

हँस्यो हिय झूलना सिय प्यारो।
अति अनूप मणि महित मनोहर झुलवत अवध विहारी॥
छन छन छवि निरखत हरषत प्रिय बरषत दृग वर वारी!
'युगलअनन्यअली' दम्पति पर वार वार वलिहारी॥

पद १०४

झूला झूलो विचारि के सुकुमारी न सिसिके॥
हौ सब विधि नागर आगर वर अडर होत केहि हिसिके।
सिरस सुमन हूँ से नाजुक तन रतन अनूपम किसिके॥
लीजे ललित लाह लोनी लखि रस रस झोंकन मिसिके।
'युगलअनन्यअली' झूलन विन सब सुख मोदक विशिके॥

पद १०५

धीरे दीजे झुलाय जू रसमाते रसीली।
नेह निकेत निगाह करत कित कोमल कलित कसीली॥
छन छन नैन सैन निरखो नित बिधु वर बदन हँसीली।
'युगलअनन्यअली' गावें गुन अद्भुत गुनन गसीली॥

कजरी-पद १०६

झूले झूलन झमकि छवि निधि लली लाल।
उर उमगि उमंगि झमकत मुद माल॥
भूले भवन भरोस भान जीवन जहान।
फूले लोचन कमल निरखत युग भान॥
खुले सरस सुचित्त हित हिय हुलसान।
भयो रसिकन हीय जग तिनक समान॥
महा मोद उत्साह सुखनिधि उमगान।
हिय 'युगलअनन्यअली' शौक सरसान॥

पद १०७

झूलो झमक हिंडोरे दोऊ दृग चित चोर।
महा मोद उमगत तकि सरयू हलोर॥
सखी सरस सलोनी गीत गावें चहुँओर।
रीझि रहे रससिन्धु हेरि नैनन की कोर॥
सुचि शीतल समीर घनघोर मोर शोर।
सुनि सुभग सरोद सचकित काम जोर॥
झोंका अजब अजूब खूब रंग रस बोर।

जोहि 'युगलअनन्यअली' देति तृन तोर ॥

पद १०८

मन मेरो मोह्यो जानकी जीवन को हिंडोर।
नाना रंग मणि मण्डित अजूब दुति डोर ॥
पट प्रेम रस भीजे अंग अंग चितचोर।
छवि उठत तरंग मानो सरयू हलोर ॥
उर उमगि उमगि सखि गावैं चहुँओर।
पिक चातक विचित्र धुनि नाचि रहे मोर ॥
झोंका झमक झमाक लली लालन सजोर।
मति मेरी विकी कलित कटाक्षन की कोर ॥
फूल्यो विपिन प्रमोद भौंर मत्त मची शोर।
जोहि 'युगलअनन्य' मोद मिट्यो मोर तोर ॥

गजल-पद १०९

सावन के दिन में शौक से झूला झुलाइये।
कुल काज लाज साज सबी विधि भुलाइये ॥
तजिके फिकर फरेब फरक सबसे होय के।
उत्साह चाह चैन की खाने खुलाइये ॥
सजिके सिंगार हार हजारों उमंग से।
सजनी सखी सहेली सलोनी बुलाइये ॥
श्री जानकी जीवन की अदा ऐश को लखिके।
सब तौर 'लताहेम' छटा छबि छुलाइये ॥

पद ११०

झूलन झमक झमाक की जाहिर जहूर है।

निरखो नजर नवीन से निज नेह नूर है ॥
लावन्यलता लोल ललित लाज को तजिके ।
लपटी ललित ललाम मधुरतर सरूर है ॥
तर तान गान मान भान शान को तजिके ।
गावें नवीन नागरी आनन्द पूर है ॥
रसिकों के हरष हेत इह सावन सोहावना ।
वरषे विशद बहार सुधा बूंद रूर है ॥
जिसका न दिल लगा कभी झूलन के झोंक में ।
पण्डित गुनी ज्ञानी सबी सबतौर कूर है ॥
चपला चमकि चमकि के चपकती है मेह में ।
मोहन मनोज मान मथन मुद मयूर है ॥
नाचे नवीनी नागरी खुश दिल रहस भरी ।
जिनकी छटा घटा को निरखि दंग हूर है ॥
बेखुद किया मन मेरा इह झूलन ने क्या कहूँ ।
इस सुख विना 'अनन्य' सबी बात धूर है ॥

पद १११

खुश लगता है सबतौर से झूलन का झुलाना ।
झूलेन झुलाये मुझे अंगों का डुलाना ॥
मनमोहने सोहन लली लालन सनेह से ।
भीने विहार प्यार निरखि होश भुलाना ॥
छन छन में हाव भाव विलच्छन विकासिके ।
देना अलीन मोद कलित गाय तर ताना ॥

अनुराग की नदियां बही हर तरफ रंगीली ।
हिय 'हेमलता' फूलि के तन में न समाना ।।

पद ११२

झुलावो आज प्रीतम को सखी झूला झलक लखि के ।
फुलावो बाग दिल दायम सरस सूरति सजन चखि के ।।
मोबारक मास मन रौशन सुभग सावन सोहावन है ।
सघन घन दरस दिन दूनी दमक दामिनि द्दगन लखि के ।।
सियावर नेह रसभीनी ललित तर तान नित गावैं ।
लता नव 'हेम' हिय हारी सु छवि प्यारी हिये रखि के ।।

पं० श्रीउमापति त्रिपाठीजी 'कोविद'-पद ११३

पिया लखु हो सावन सु बहरिया ।
धीर समीर नीर बरसत अति बसि गये सबुज शहरिया ।।
झूला झूलिये भूलिये मति पिय करिये नित कचहरिया ।
'कोविद' मोद विनोद महा रस जल थल बहत डहरिया ।।

पद ११४

लाल लली झूलैं झमकि झुलनमां ।
बन उपबन निन्दत नन्दन बन
पूरि रह्यो फलि फलन फुलनमां ।।
सुर निरखत अति दशन अधर धरि
छवि कवि भारति जितन तुलनमां ।
'कोविद' तन मन भूषण वसन सब
करत निछावरि ऊपर हुलनमां ।।

श्रीशीलमणीजी–पद ११५

झमकि झुकि झूलति सिय प्यारी ।
प्यारी झमकि झमकि झुकि निरखत हँसनि नेह वारी,
सावनी सारी मनहारी ॥
हार हमेल गरे गजमुक्ता चन्द्रहार धारी,
छबीली छवि में मतवारी ॥
'शीलमणी' रघुराज लाल को भाग लखो भारी ॥

पद ११६

लिये झूलैं छबीले सुघर धनियाँ ।
मंद हँसनि मुखचन्द प्रकाशित दशरथसुत रघुपतिरनियाँ ॥
घूंघट बीच अनोखी चितवनि सुभग उरोज कसे तनियाँ ।
'शीलमणी' नव रंग रँगीली जोरी सुभग सब सुखदनियाँ ॥

पद ११७

देखो देखो री हिंडोरा झूलैं जनक लली ।
एक ओर लली झूलैं एक ओर लालन अति सुंदर अति रमक रली ॥
नोलकमल से नवल लाड़िले सियाजू बनी जैसे चम्पकली ।
तरुतमाल से नवल रसिकवर 'शीलमणी' सिय स्वर्णबली ॥

श्रीसरयूदासजी "सुधामुखी"–पद ११८

प्यारी झूलन पधारो झुकि आई बदरा ।
सजि भूषण वसन अँखियन कजरा ॥
मान कीजिये काहे को सुख लीजिये अली ।
तूं तो परम सयानी मिथिलेश की लली ॥

देखो अवध ललन पिया आगे हैं खड़े।
रस वरषैं "सुधामुखी" जब पायन पड़े॥

पद ११९

धीरे धीरे से झुलावो मेरी प्यारी ललना।
सिया अति सुकुमारी झोंका भारी भल ना॥
यह रूप की निकाई बिनु देखे कल ना।
सखी चाहती है नैना यह लागे पल ना॥
श्रम सींकर सुहाई वेसर मोती हल ना।
कहै "सुधामुखी" गाय पिया मन छल ना॥

पद १२०

झमकि झूलत सिय रघुराई। विमल वरषा ऋतु बनि आई॥ कोटि रति काम से ललाम रसधाम राम पिय घनश्याम सिय दामिनी दमक तामें अति अभिराम गज मोतिन के दाम सु बलाकन की छवि छाई॥ दादुर चक चकोर भूषण को शोर आली मूरि मूरि मोर सी नचति चित चोरि चोरि तोरि तोरि तान गाई॥ मेहदी नखन वीरबधून की भीर धुनि मधुर मृदंग घन गरज अनंग जल बरपि बरपि हिय करषि करषि "सुधामुखी" सरि सरसाई॥

पद १२१

झूलन पर मान करी सिय प्यारी॥
करि मुख विमन झूलन से उतरी बैठी आइ द्रुम कुंजे।
प्यारे उतरि मनावन लागे मानत नाहिं दुलारी।

पिय बोले सुन प्राण पियारी कौन सी चूक हमारी ।
हमरे तौ तुम प्राण जीवन धन तुम सम और न नारी ॥
तुव मुखचन्द्र सुधा के आशिक नैन चकोर हमारी ।
तुव मुखकमल भ्रमर मेरे मन होत कबहुँ नहिं न्यारी ॥
लै विजना पिय मुख पर ढोरे करत वियार सम्हारी ।
तब हँसि उठी "सुधावदनी" सिय मिलि भरि भुज अँकवारी ॥

श्रीयुगलअलीजी-पद १२२

श्यामा श्याम की झुलनि मेरे मन अटकी ।
लखि ललित लसनि सो सुरंग पट की ॥
झोंका झमकि झुलावैं गावैं मुरि मटकी ।
सुख सरस रसीली छवि चष अटकी ॥
रस भीनी प्रीति युगलअली के घट की ।
सोहि सकल सु साज सरयू के तट की ॥

श्रीरघुवरशरणजी-पद १२३

सावन लागु सुहाई हो पियवरवा ॥
मनसिज घेरि घटा नभ छाये रस बरसत झरिलाई ।
पिउ पिउ कोकिल मोर पुकारत सुनि सुनि जिय तरसाई ॥
कुसुमित विपिन प्रमोद लता तरु सननन चलु पुरवाई ।
झुलिहौं मैं आज रसिकमणि तोहि संग प्रीतम प्यारे, 'रघुराई" ॥
दोहा—सजि सावन सोभित भये, सिय सियवल्लभ लाल ।
कनक थार सजि आरती, करहिं अवधपुर बाल ॥

आरती-पद १२४

आरती करु सखि श्यामसुन्दर की।
मनमोहन प्रीतम सियवर की॥
मदन दम्भ के खम्भ गड़े हैं, कनकदण्ड मणि रतन जड़े हैं,
पटुली द्युति जगमगित अड़े हैं, तहँ बैठे दोउ सुखसागर की॥
दिनकर सम शिर क्रीट धरे हैं, चन्द्र ज्योति चन्द्रिका परे हैं,
तरिवन कुण्डल झलक भरे हैं, नासामणि बुलाक छविधर की॥
ताल पखावज बीण बजत हैं, चन्द्रकला सुभगाजू नचत हैं,
थेइ थेइ थेइ चहुँओर मचत है, रीझत नवल रसिक नागर की॥
झूलत सिय 'रघुवर' सरसत हैं, झमकि झुलाय सखिन हरषत हैं,
कुसुमन झरि सुरतिय वरषत है, जै जै कहि दोउ सुखमाकर की॥

राग ईमन-पद १२५

झूलन लखि सखिया झमकि चलु रे।
गगन घन गरजै सुनत जिय लरजे,
मदन हिय तरजे उमंग छाई रे॥
झुकाई झुरि बदरी भिगाई सूहो चुनरी'
सो गावो राग कजरी सावन आई रे।
झूलहिं सिय प्यारी जू झुलावैं प्यारे राघो जू,
नचति सब सखियां सो ताताथेई रे॥

राग पूर्वी-पद १२६

नई नई गोरिया सो करिकै शृंगार सब,
झूलन चली हैं नव सावन उमंग भरि॥

लहँगा सो कटि देश किंकिणी अनूप वेश,
ओढ़नी कुसुम रंग मोतिन किनारी जरि।
चोटिया गुहीए भाँति रतन की लागी पांति,
नैनो में काजर गले हीरन की पंच लरि॥
बादर घुमड़ि आये विजुरी चमकि छाये,
नान्हीं नान्ही बुंदिया झमक झम झम झरि।
कोकिला कुहुक जागे मोरिला नचन लागे,
पपिहा बोलन लागे पिउ पिउ करि करि॥
ओसरी ओसरी झूलैं पिय प्यारी को झुलावैं,
गावैं राग सुहव मलार तान धरि धरि।
उड़त बसन खसि पड़त भूषण महि,
हँसि हँसि 'रघुवर' देत हैं सुधारी करि॥

गजल-पद १२७

क्या मजा सावन की सखि मौशिम जो आई है।
दशरथ का बांका छैल ने झूला लगाई है॥
जरकस को चीरा शीश पै कलँगी झुकाई है।
जुलमी जुलुफी जैसी मानो नागिनि जगाई है॥
केशर की चन्दन भाल में कुण्डल सोहाई है।
नैनो कटारी मारि कै घायल बनाई है॥
क्या छटा 'राघव' की बनी नैना लोभाई है।
दशरथ कुँवर के हाथ में तन मन ठगाई है।

गजल-पद १२८

सुनरी सखी एक बात मैं तुमसे कहौं प्यारी ।
झूला लगी दिलदार की सावन हुई जारी ॥
मोरों पुकारैं बाग में कोयल कुहुक मारी ।
पिउ पिउ पपीहा बोल के मेरी जिगर फारी ॥
झूलैं सलोने सांवरे सिय संग सुकुमारी ।
गावैं सखी सब रेखता रस की तरहदारी ॥
जबसे झनक मैंने सुनी झूलन बहरदारी ।
नहिं चैन पड़ती है मुझे छिन छिन फिकरदारी ॥
करते न हैं हम पर सखी 'राघव' निगहदारी ।
गई हमसे सखी पिउ की कसुरदारी ॥

पूर्वी-पद १२९

झूलन की ऋतु आई सजन,
संग झूलो री मोरी सजनी ।
बेंदी भाल दृगन भरि अंजन,
मोतियन मांग सँवारि फूल सम फूलो री ॥
सजि श्रृँगार सब साज सँवारहु,
गावहु नइ नइ तान सान यह खूलो री ।
चलत पवन गरजत घन सावन,
रघुपति ढिग चलु आज काज सब भूलो री ॥

चंचरीक-ध्रुपद १३०

झूलत अवधेश लाल लीन्हे संग सीय बाल,

बन प्रमोद सघन कुंज पुंज सखिन सोहैं।
कूजत कलकण्ठ मोर गुंजत भल भनकि भौंर,
वरषत घन गरजि थोर मरुत मनहिं मोहैं॥
भूषण रव झमझमात सुरंग बसन गमगमात,
छम छमात छवि अनूप रति मनोज मोहैं।
बोलत मृदंग झाल निर्तत सखि देहिं ताल,
लूटहिं सुख नव रसाल 'रघुवर' मुख जोहैं॥

राग खम्माच-पद १३१

अवलोको सखी राज हिंडोरे॥
हेम जड़ित मणि खंभ रचो रे, मोतिन गुहि सुठि रेशम डोरे।
पटुलि झलक जगमग चितचोरे, बैठे तापर युगल किशोरे॥
सावन सजि गरजत घनघोरे, कुहु कुहु कुहुकत कोकिल मोरे।
नान्हि नान्हि बुंदियन वरषत थोरे, पवन चलत पुरवाई झकोरे॥
बजत मृदंग सितार तँबूरे, तुम तननन सखि तानन तोरे।
निरतति चन्द्रकला रसबोरे, चहुँदिशि उचरत थेइ थेइ थेइ रे॥
झूलत सिय 'रघुवर' दोउ जोरे, हलरत लट जुलफन की मरोरे।
छवि छहरत फहरत पट छोरे, नेवछावरि रति मदन करोरे॥

ठुमरी-पद १३२

बाँकी झूलनि तिहारी मन मोहैं रे॥
सिया प्यारी अलबेली गलबांह दिये टेढ़ी पगिया सुभग शिर सोहैं रे।
'रघुवर' प्यारे बड़ी अँखियाँ कटीले तेरी कल न परत बिनु जोहैं रे॥

पद १३३

हिंडोले झूलैं श्री लाड़िलो लाल ॥

गौर वरन मिथिलेशनन्दिनी श्यामल दशरथ लाल ।
लाल भूषण अंग झलकत पहिरे वसन सुठि लाल ॥
लाल रुचिर श्रीखण्ड तरुतर लगो है हिंडोले लाल ।
लाल सखी दोउ ओर झुलावहिं गावहिं गीत रसाल ॥
लाल मनोहर जोरी अनुपम सखा सखी तस लाल ।
लाल छटा निरखत सखे 'रघुवर' भई दोऊ अँखियाँ निहाल ॥

राग विहार-पद १३४

कदमतर झूलत दशरथ लाल ॥

लाल घटा झुकि गरजत वरषत दामिनि दमकत लाल ।
लाल बाग कुसुमित तरु शोभित बोलत कोकिल लाल ॥
लाल सखी झुकि झमकि झुलावहिं फहरैं वसन सुठि लाल ।
लाल लाल सब साज बाज लिये झूलत सिय रघुलाल ॥

कहरवा-पद १३५

मेरी प्यारी सियाजू हिंडोले झूलैं लाल री ।

लाल महल में लाल हिंडोला लाल लाल सब बाल री ।
लाल लाल सब सौंज लिये कोइ छरी फूल लिये लाल री ॥
लाल चन्द्रिका शीश विराजै करनफूल युग लाल री ।
लाल नासिका बेसरि शोभै छवि बुलाक अति लाल री ॥
लाल कंचुकी सारी कुसुम रंग लाल गले मणि माल री ।
कंकण किंकिणि लाल विराजै भाल विन्दु इक लाल री ॥

लाल सखी दुहुँओर झुलावैं मन्द मन्द गति हाल री।
झूलहिं 'रघुवर' प्यारी सियजू देखि रती उर शाल री॥

कहरवा-पद १३६

मेरा बांका समलिया हरे रंग झूलत आज रे॥
हरित महल में हरित मणिन में हरित हिंडोला भ्राज रे।
हरे हरे भूषण सब साजे झूलत श्री रघुराज रे॥
हरित सितार सारंगी वीणा हरित ताल छवि छाज रे।
हरित सखी सब निरत करत हैं हरित पखावज बाज रे॥
हरित भूमि सब तरुवर हरि हरि हरित कीर खग बाज रे।
हरित मोर भवनन पर नाचत हरित गगन घन गाज रे॥
हरित हरित 'रघुवर' छवि लखि करि काम कोटि शत लाज रे।
हरित छटा अवलोकि गगन ते कुसुम वरष सुरराज रे॥

पद १३७

तनिक धीरे झूलो जी राजकिशोर॥
घनन घनन घूमि बादर घहरत विजुरी चमके चहुँओर।
चन्द्रबदनि सिय थर थर कांपति डरपि गहति पट छोर॥
बड़े बड़े बूंदन बरसत सरसत सुरंग वसन भीने मोर।
अरजो न मानहु 'रघुवर' प्रीतम कस कठोर चित तोर॥

पूर्बी-पद १३८

विनती लाल मोरी मान,
ठहर झोंका झूलो हो मोरे प्राण।

कत बरजौं कछु समुझहु नाहिन,
मारहु नैनो की सान बान सम तूलो हो ॥
निपट निदरदी पीर नहिं जानत,
चितवन मृदु मुसुकान प्राण जनु घूलो हो ।
विनय सुनहु प्रीतम रघुनन्दन,
तजहु अनोखी चाल साल अब भूलो हो ॥

बरवा–पद १३९

सुनिये सजन रगरी रे । तोरे संग ना झुलिहौं कजरी ॥
झमकि झमकि झर सावन बरसै भीजि गई चुन्दरी रे ।
लह लह लह लह चलु पुरवैया कांपत तन सगरी रे ॥
टुटिगो हार फुलन के गजरा मोतियन की तिलरी रे ।
अतिशय झोंक झुलावहु रसिया गिरि गई नथ दुलरी रे ॥
रसिक शिरोमणि 'रघुवर' तुम से लगी है प्रेम फँसरी रे ।
दै गलबांह मिलहु अब बालम इतनी अरज हमरी रे ॥

खेमटा–पद १४०

कैसे झुलिहौं बलमुआँ सावन रगरी ॥
गरजि-गरजि घन जिय तरसावत निकसि चलत भीजि गई सगरी ।
झुकि झोंकहु पिय बात न मानहु मुरुकि गई नाजुक अंगुरी ॥
कदम डार मोरी चुन्दरी उरझि रही सुरुझन दे पिय गैहौं कजरी ।
यह विनती मानिय पिय 'राघव' नित नित झुलिहौं मैं तोरे संग री ॥

पद १४१

कदम डार मोरी सारी लटक रही कैसे के झुलिहौं सावनमां ॥

एक वैरी मोरी कदम डार भई दूजे पुरवाई पवनमां।
चलत झकोर अलक मोरी छूटि गई आई हौं नई गवनमां॥
झुकि झोंकहु पिय बात न मानहु गिरि गई कर से कंगनमां।
हौं सुकुमारि कमर लचि जैहैं फिरि कैसे जैहौं भवनमां॥
टूटि गयो हार गले मोतियन की तिलरी में लगी फुदनमां।
निपट निठुर प्रीतम 'रघुवर' तुम लखहु न मेरी बदनमां॥

खेमटा-पद १४२

मैं जानी सजनी सावन अब जैहैं।
झूलि लेहु प्रीतम नागर संग ना तो करमीजि पछितैहैं॥
यह सुख साज समाज सोहागिनि फिरि न अनत कहुँ पैहैं।
सुमिरि सुमिरि यह छवि 'रघुवर' की छिन छिन विरह सतैहैं॥

विहाग-पद १४३

लाल मोरी अँखियाँ नींद झुकि आई।
अब जनि झूलो रसिक शिरोमणि नींद सों नैन पिराई॥
झोंका दे न सकति सखियाँ सब झुकि झुकि खसति घुमाई।
चन्दमन्द ढुरि हेरत हिरणी मोतियन माल सिराई॥
करत शोर चहुँओर मोर पिक रजनी के अन्त जनाई।
कहति जनकजा सुनो पिया 'रघुवर' झूलन देहु थँभाई॥

कवित्त-परस्पर-सम्वाद

चकई ना बोले श्याम बैठ क्या बोल बोले,
कोकिल अकुलानी कहीं कोकिली बिछूनी है।
दीपक की मन्द ज्योति तेलहू ते पूर नाहिं,

जागत पुरी के लोग तश्कर निगरानी है ॥
घंट घहरानो कहीं अवध घर पूत भयो,
चिरैयाँ चहचहानी कहीं अहिनो डेरानी है।
जान दो तो जान दो न जान दो तो सांची कहो,
सूरज की किरण श्याम देखो दरसानी है ॥

श्रीज्ञानाअलीजी-पद १४४

रसिया ना मानै सजनी झूलत मन न अघाय।
सोवति सजनी अपने भवनवाँ औचक मोहि जगाय ॥
बन प्रमोद कुंजन कुंजन में नित उठि झूलत आय।
'ज्ञानाअलि' सिय पिय संग झुलिहौं अभय निशान बजाय ॥

पद १४५

झूलत रसिक श्यामा श्याम।
श्रीजनकनृपनन्दिनी रघुनन्द आनन्द धाम ॥
नवल घन तन श्यामसुन्दर तड़ित द्युति सिय वाम।
युगल छवि अवलोकि झुकि झुकि काम करत प्रणाम ॥
चहूँदिशि घन घेरि आये चपल दमकत दाम !
मधुर मृदु रव कोकिला धुनि सुनत मन विश्राम ॥
अति अनूप हिंडोलना छवि सखिन को अभिराम।
'ज्ञानाअलि' सिय लालमुख छवि निरखि पूरण काम ॥

पद १४६

नवल दोउ झूलत अलिगण साथ।
नवल सखी सम वयस अतुल छवि लखि रति मदन लजात ॥

नवल हिंडोल कुंज द्रुम फूले त्रिविध पवन सरसात।
नइ नइ तानन दोउ मिलि गावत मंद मंद मुसुकात॥
नवल वसन भूषण अंग सोहैं लखि छवि दृग न समात।
'ज्ञानाअलि' सुख वरणि न आवै शिथिल भयो सब गात॥

श्री हनुमानशरणजी 'मधुरअली'–पद १४७

अवध सैंयां झूलन को ऋतु आई।
सरजू तीरे रचौ हिंडोरा सिय सुकुमारि बुलाई॥
सुनि सुख मानि लाल दशरथ को हेरत मृदु मुसक्याई।
'मधुरअली' मुखचन्द विलोकत आनन्द उर न समाई॥

पद १४८

बदरवा अरुण रंग छाये, गरजि वारि बरसाये॥
अरुण पोशाक अरुण मणि भूषण अंगन सुभग सुहाये।
चटक चाँदनी लाल लगी है लालै फरश बिछाये॥
तापर झूला बन्यो मनोहर लाल सी साज सजाये।
तेहिपर लसत नवल दोउ सियपिय रतिपति लखत लजाये॥
लाल वसन अलियन अंग राजत तेइ सब गाय झुलाये।
'मधुरअली' लाली छवि बांकी देखि नयन फल पाये॥

पद १४९

नवल दोउ झूलत हरे हरे, छवि सिंगार भरे॥
सरयूतीर हरित कुंजन बिच तरु तमाल के तरे।
हरित वितान तन्यो ता ऊपर हरित मोफरस परे॥
तापर हरित हिंडोर मनोहर देखत मनहिं हरे।

हरित पाग बागो सो हरित है भूषण मणिन हरे ॥
वसन विभूषण हरित रंग क्या सिय अंग भूषित करे ।
हरित पोशाक सखिन अंग साजे मेघ मलार उचरे ॥
त्रिविध समीर बहत सुखदायक रंग फुहार झरे ।
हरित छत्र शोभित सुषमानिधि हरित सो चामर ढ़रे ॥
'मधुरअली' लखि हरित छटा सब निज हिय मांहि धरे॥

पद १५०

झूलन की क्या छवि छाई हो ।
करि सिंगार सुभग सुषमानिधि जनकलली रघुराई हो ॥
चन्द्रकला सुभगादि अलीगण राग मलारहिं गाई हो !
'मधुरअली' मुखचन्द युगल लखि तृण तोरत बलिजाई हो ॥

पद १५१

दै गलबाहीं झूलैं दोउ आज ।
सरयू तीर तमाल कुंज में जनकलली रघुराज ॥
काह कहूँ सखि कहत बनै ना कोटिन सुख के साज ।
'मधुरअली' सब तजि संग झुलिहौं छांड़ि लोक कुल लाज ॥

पद १५२

झूलत लाड़िली रघुवीर ।
रतन जड़ित हिंडोलना सुचि सुभग सरयू तीर ॥
करहिं गान मलार अलिगन स्वर सुखद गम्भीर ।
नचत थेइ थेइ मोर गति लै मोद उमग शरीर ॥
समय लखि सुर सुमन बरषत जलद बरषत नीर ।

'मधुरअली' समीप पंखा लिये करत समीर ॥

पद १५३

सिय पिय दोनौ झमकि झुकि झूलैं ।
झोंका देत परसपर हँसि हँसि फहरत अरुण दुकूलैं ॥
तिरछी तकनि सांग सी हूलैं होत अलिन उर शूलैं ।
'मधुरअली' आनन्द के मारे प्रेम विवश सुधि भूलैं ॥

पद १५४

झुकि झूलैं हिंडोरे लाल ललो ।
नील कमलसम छवि प्यारे की सिय छवि सुन्दर चम्पकली ।
आस पास सब सखी सलोनी गावहिं राग मलार भली ।
अति मनहरन युगल जोड़ी को देखि जियत नित 'मधुरअली' ॥

श्रीशिवदयालजी-पद १५५

तनिक मनहरनी चलू यहि ओर ।
जित उनयी पुनीत सरयू तट श्याम घटा घनघोर ॥
महाराज ठाढ़े मग जोहत साजे नवल हिंडोर ।
दामिनि दमकि रमकि छवि छहरत बोलत दादुर मोर ॥
यों सुनि स्वामिनि वेगि सिधारी सजि तन सुरंग पटोर ।
'शिवदयाल' दम्पति मिलि हरषैं विहँसि चितै दृग-कोर ॥

श्रीरघुराज सिंह जी-पद १५६

चलिये सांझ समय पिय झूलन ।
आयो सावन प्रेम सोहावन फूलि रहे सगरे बन फूलन ॥
मोर शोर चहुँओर मनोहर हारत भूमि मै यमुना कूलन ।

'श्रीरघुराज' प्रिया प्रीतम लखि सखि लूटें सुख लूट अतूलन ॥

पद १५७

आये हो, सिय रघुनन्दन लै सखि बृन्दन झूलन चाये ॥
शिर पुहुप मुकुट सुमाल पुहुप सु पुहुप कुण्डल कान है।
कटि भुज चरण सब पुहुप भूषण कछु न जग उपमान है ॥
सब अलिन अंगन पुहुप अभरन बसन बेष विराजहीं।
सिय सजी पुहुप सिंगार राजति रुचिर सखिन समाजहीं ॥
आनन्द छाये ॥ १ ॥

पन्ना पदिक पटुली जटित गजमणि मही मण्डित करें।
नीलक सुखंभ दराज बेलन पुहुपराज छटा छरें ॥
भँवरो विभावित मण्डित माणिक इन्द्रमणि कलसावली।
जरकस वितान निशान झालरि मुकुत की झलकावली ॥
सरयू तट भाये ॥ २ ॥

चहुँओर घहरत घोर घन वर्षत सु हरषावन हियो।
सब ठौर मोर मचाइ शोर शिखीन सुख पूरण कियो ॥
नव विटपवल्ली हरित वरन विशाल तालन पै लगी।
नव दूब इन्द्रवधू विराजहिं मनहुँ विधि चूनरि रंगी ॥
सर भरि आये ॥ ३ ॥

सखी गहे वीणा मृदंग मुरज उपंग मंजु बजावहीं।
धूरिया गोंडहु सूर मेघ मलार रागिनि गावहीं ॥
सुखकन्द झूलत मन्द मन्द सुचन्दबदन सोहावहीं।

कोऊ विजन बीजहिं बाल कोउ 'रघुराज' चँवर चलावहीं ॥
जन्म फल पाये ॥ ४ ॥

पद १५८

सरयू के तीर गड़ो हिंडोलना झूलत सीताराम आली ॥
मन्द मन्द बरषत घन बूंदन, झरत मनहुँ कलिका नव कुन्दन,
हरित बरण आराम आली ॥ छिन छिन दिशनि दीपति दामिनियां,
झमकि झुलाय रही कामिनियां, पिय छवि दृग आराम आली ॥
'श्रीरघुराज' शोक सब बिसरो, पूरण भयो मनोरथ सिगरो,
आनन्द आठोयाम आली ॥

पद १५९

दोऊ झूलत हिंडोरे राम सिया । सजनी उर बोवत प्रेम बिया ।
उमड़ घुमड़ आये बादरवा मोरवा मंजुल शोर किया ॥
शोक नशावन सुख सरसावन सावन गावन लागी तिया ।
'श्रीरघुराज' झमक झूलन में वीण बजावत सीयपिया ॥

पद १६०

सिय के पिय की छवि देखैं ।
झूलि रहे सरयू सरि तीर मचाय आनन्द अलेखैं ॥
उड़ैं अलकैं लहि पवन प्रसंग मुखें छहरैं पट पीतहिं संग,
मनो शशि पै चलिजात भुजंग निवारत दामिनि पेखैं ॥
कोमल बूंद झरैं घनवृन्द, पीताम्बर अंचल कर अरविन्द,
परस्पर वारत सिय रघुनन्द हँसैं दोउ आनन्द वेखैं ॥
आवत जात हिंडोल सुहात, प्रभा शित श्याम छटा छहरात,

सु सावन गाय लखैं सखिव्रात तजैं 'रघुराज' निमेखैं ॥

झपताल-पद १६

झरत झर झर सलिल झकरि झोंकन लगी। सघन घन घुमड़ि घहरत सु छहरत घटा, छनक छवि छिति मिलति मनहुँ आनन्द पगी ॥ ललित लहरत ललिन उड़त अंचल अमल, मनहुँ छहरत कुसुम धनु धुजा जै रँगी ॥ सरयु तट विकट हिंडोल विरचित पुरट, खचित मणि माणिकनि मुकुति झालरि झगी ॥ डहर डहरत शिखी सुखित शिखिनीन-युत, करत धुनि मधुर जलधरन सँग में सगी। परम कमनीय सिय पीय सिय संग झूलत सु फूलत हरष हेरि रति सगबगी। सखी कोउ मचति कोउ नचति कोउ रचति, गति लचति कोउ लंक उर प्रीति की दगदगी। सुखद सावन सुहावन सु रस रास मधि, चहत 'रघुराज' युग-चरण की लग लगी ॥

रूपक-पद १६२

सरयू के तिरवा गड़ो हिंडोरवा झूलत रघुवर जानकी।
बरषत बदरवा हरि हियरवा मनहुँ लर मुकुतान की ॥
सखि दिपत आनन भरि दिशानन लेहिं तानन धूरिया।
पल्लवित कानन निरखि भानन सुख वितानन पूरिया ॥
प्रीतम झुलावैं सुरंग छावैं बहु बजावैं बाजने।
दृग छवि छकावैं पिय हँसावैं हुलसि कहि कहि साजने ॥
पट अरुण सोहत मनहिं मोहत देव जोहत जकि रहैं।
चढ़ि जात आवत गगन भावत कुसुम झरि लावत जहैं ॥

अवधेश राजकुमार राजत सहित सखिन समाज हैं।
जग काज तजि छवि लाज लखि बलिजात जन 'रघुराज' हैं ॥

पद- १६३

झूलत कुंजन भीजि रहे दोउ।
पिय मृदु वैननि मोहि गई सिय, सिय मृदु वैननि मोहि रहे सोउ ॥
सिय झझकति हरि करनि सँबारति, सिय के कर पकरत विहँसत ओउ।
'श्रीरघुराज' छकी सब सखिया अँखियाँ में नहिं पलक करैं कोउ ॥

श्रीसियरसिकअलीजी-पद १६४

झूलैं नवलरसिक रंग भीने दोऊ आज।
फूली कमल कली सी मृगनयनी की समाज ॥
घिरी सघन घटा सी छवि रघुकुल राज।
संग सोहैं सिय प्यारी लखि दामिनीहूँ लाज ॥
बन्यो विपिन प्रमोद सब सुषमा को साज।
'सियरसिकअली' के हिये यहि छवि छाज ॥

पद १६५

सिय सजि सावन तीज सजन संग झूलैं हो।
सजि सुरंग पोशाक सखी सम तूलैं हो ॥
गावहिं राग मलार श्रवण सुख मूलैं हो।
कानन कल कमनीय काम लखि भूलैं हो ॥
किशलय कोमल धनु अशोकवन फूलैं हो।
विकसे कमल कल नीर सरयू के कूलैं हो ॥
'अलिसियरसिक' झुलाये दोऊ दिन दूलैं हो ॥

पद १६६

झूलत नवल दम्पति आज।
नवल नागरि रूप आगरि चलीं झूलन काज ॥
नवल वसन सुरंग नव तन नवल भूषण साज।
नवल नव घन घेरि आये नवल घुरि-घुरि गाज ॥
नव मुचंग मृदंग वीणा विविध बाजन बाज।
गान तान तरंग मेघ-मलार सहित समाज ॥
नवल नीर गंभीर निर्मल सरित वर शिरताज।
सरयु तट वट निकट मणिगिरि रमत सिय रघुराज ॥
नवल शोभा द्रुमन गोभा हरित तृण छवि छाज।
'सीयरसिकअली' झुलावति नवल झूलनि राज ॥

पद १६७

झूलत सरस सरयू तीर।
आज री गुण आगरी सिय नागरी संग भीर ॥
सागरी रस रूप रमनी सजि सुरंगी चीर।
पागरी शिर लाल राजे बाहु बाजू हीर ॥
परसपर चितवनि मनोहर हरत रसिकन पीर।
'सीयरसिकअली' झुलावति बहत धीर समीर ॥

धुरिया मलार-पद १६८

अब घन घमण्ड नभ छाये।
पवन चलत पुरवाई सनननन चम चपला चमकाये ॥ बजत मृदंग गरज जलधर की, झिल्ली झनकारैं मानो धुनि नूपुर की,

मेढ़क ताल बजाये ।। नटत मयूर थिरकि थररररर, तासु शिखण्ड फरकि फररररर, राग मलार उचार चातकन, कोकिल कल स्वर गाये ।। विपिन प्रमोद मदन मन लोभित कुसुमित लता ललित तरु शोभित, निरखि ललन मन भाये ।। 'अलीसियरसिक' नवल ऋतु निरखत, उर उमंग दम्पति दिल करषत, सुख सरसत बादर झुकि वरषत, पावस रहस रचाये ।।

श्रीश्यामसखेजी पद १६९

दशरथ राजदुलारे सिया संग झूलैं हो ।।
सरयू किनारे सुहाई कदम जुरि छहियाँ हो ।
ताहि तर झूलैं हिंडोरा दिये गलबहियाँ हो ।।
एक ओर जनक किशोरी सखिन संग सोहैं हो ।
एक ओर राघो विहारी लली मुख जोहैं हो ।।
प्यारी की लट पिया जुलुफन झूलत अरुझैं हो ।
अचल रहैं 'सखेश्याम' कबहुँ नहिं सरुझैं हो ।।

पद १७०

मैं तोरे संग ना झूलौं बालम जियरा गइल घबराय ।
अतिशय झोंक झुलावत रसिया वेसर गइल हेराय ।।
अँचरा फरकि फरकि महि लोटत गूंथे लट छिटकाय ।
'श्यामसखे' मोरी अँगिया भीजि गई बेनियां दीजै डोलाय ।।

पद १७१

झमकि झुलौंगी सैंया तोरे संग ऋतु सावन की बहार ।।
सरयू किनारे नई नई गछिया रे जहँ रचे मदन बजार ।

रमकि बहत पुरवइया रे बुन्दन परत फुहार ॥
धरि धरि तोरे गलबहियाँ रे गाऊँगी राग मलार ।
'श्यामसखे' कदम जुरि छहियाँ रे नित नई करिहौं बहार ॥

श्रीजानकीवरशरणजी 'प्रीतिलता'-पद १७२

पिय लागो सावन मास आस यह मेरी ।
चलि झूलैं विमल हिंडोर गले भुज गेरी ॥
भये हरित वरन वर भूमि सोहावन लागै ।
फूलैं फलैं विपिन प्रमोद मोदमय वागै ॥
गुंजत मधुकर करि शोर मोर मन रागै ।
भल समय सुखद अवलोकि निठुर पन त्यागै ॥
शुक चातक कोयल हंस कोकिला टेरी ॥ पिय० ॥
सुनि प्राण प्रिया वर वैन नैन लखि प्यारी ।
गहि अंक रंक ज्यौं सुधन मोद लहि भारी ॥
चलो मेरी जीवन जीव सकल सुखकारी ।
श्रीचन्द्रकलादिक सखी सुसाज सम्हारी ॥
आयो सरयू वर तीर घटा घन घेरी ॥ पिय० ॥
विद्रुम नगमणि रचि हेम अनूपम झूला ।
तेहि बैठे सिय महबूब खूब अनुकूला ॥
सखि झुकि झुकि झमकि झुलाय पाय प्रिय दूला ।
नभ विबुध बधू बहु हरषि वरषि रही फूला ॥
सुखकन्द मन्द मुसुकाय सिया तन हेरी ॥ पिय० ॥
पट पीत नील फहराय लपटि अरुझानी ।

सुरझावत सिय पिय विहँसि नहीं सुरझानी ॥
दोऊ नील पीत मिलि हरित रंग प्रगटानी ।
सखि गावें हरे हरे गीत हेरि सुखमानी ॥
प्रीतम तमाल तरु 'प्रीतिलता' लपटेरी ॥ पिय० ॥

पद १७३

जित देखो घटा तित छाय रही ।
बिच दामिनि दुति दमकाय रही ॥
अंबर घेरि रहे चहुँदिशि शुचि रुचि छवि बन बरसाय रही ।
पूषन पूषन अदा अदूषन भूषण धुनि सरसाय रही ॥
चन्द बिन्दु अरबिन्द कन्द मुद लखि मति गति सकुचाय रही ।
तार तार तारापति लाजित साजित साज सजाय रही ॥
अलि अवली अलबेलि सकेली केलि वेलि विगसाय रही ।
दम्पति 'प्रीतिलता' सखि सम्पति गुरु करुणा दरसाय रही ॥

पद १७४

झलित झलमलित झुकि झूमि दोऊ राजहीं ।
नीरजा तीर श्रीजनकजा संग मिलि धीर रघुवीर हिंडोल सुख साजहीं ॥ बजत वर वाजने छाजने मेघ धुनि शोर घनघोर पिक मोर मन गाजहीं । अरुण वर वसन खुश रंग रंगी लसे 'जानकीवर' सहित छैल छवि छाजहीं ॥

पद १७५

परसपर झूलन छवि हेरैं, सुहँसि हँसि दोउ भुज गर गेरैं ॥
वैन चैन ऐन सम अनत लखैन कहुँ आनन्द के दैन दोउ लैन

मन मैन हर, चातकी चकोरी मोरी गोरी चहुँओरी शोरी, सिय सिय-पिय टेरैं ॥ श्याम गौर गात नील पीत पट फहरात छवि छहरात बात बहत त्रिविध शुभ, परसि परसि रस सरसि बरसि मानो, घन दामिनि घेरैं ॥ अवध सरयू तीर हीर मणि छिति मिति मिलित परेश पर परम प्रकाश नित, निगम अगम गुरु करुणा सुगम 'प्रीतिलता' सिय-पिय मेरैं ॥

पद १७६

लली लालन दोउ संग झूलैं, परसपर केलि करत फूलैं ॥ सरयू तरंग घनघोर शोर चहुँओर बाजत मृदंग मुरचंग चंग दंग होत, ढंग देखि औरहीं उमंग देव बधू सब, लाज साज भूलैं ॥ कोकिला की कूक सुनि चकित चकोर चारु मार रति सारस अधीर पीर कीर कल, कामिनी कमल दल अमल सुगंध सार, हारि मानि हूलैं ॥ 'जानकीसुवर' संग सुघर अधर लाल चाल सु रसाल बाल पहिरि सुकण्ठ माल, भूषण विसाल लाल बसन रसन जाल, जड़ित युगल तूलैं ॥

पद १७७

चलोरी २ मोरी संग की सहेली सिय पिय झूलत झुलनमां ॥
निरखति विपुल ब्योम सुरवामा हरषित बरषि फुलनमां ।
सिय मुख शशि पिय नैन चकोरी यह छवि नाहीं भुलनमां ॥
श्रीचन्द्रकलादि अली अलबेली दुहूँदिशि हूलत हुलनमां ।
गान तान सखि प्राण सजीवन हिये की हरत शुलनमां ॥
सिय सिय पिय हँसि दिये गलबहियाँ पटतर कहुँ न तुलनमां ।

'प्रीतिलता' दोऊ जीवनधन सब सुख के हैं मुलनमां ॥

पद १७८

हेरो हेरो सिया छवि आज पिया संग झूलि रही ॥ निरखि निरखि सुखकन्द चन्दमुख हरषि सरस सुख पाय, अपनपौ भूलि रही ॥ प्रीतमहूँ अवलोकि प्रिया छवि निज मति गति सरसाय, महा मुद मूलि रही ॥ श्रीचन्द्रकला श्रीचारुशिलादिक दुहुँदिशि शौक बढ़ाय, झमकि झोंका झूलि रही ॥ नव नागरि सिय पिय नव नागर दृगन रही छवि छाय,सु 'प्रीतिलता' फूलि रही ॥

पद १७९

झूलैं रमकि झमकि प्रमुदित तन मन ॥
सिया सोम बट छाहीं पिया दिये गलबाहीं,
शोभा बरणि न जाहीं कहाँ दामिनी सुघन ॥
साजे साजन सुरंग अंग अंगन उमंग,
मृदु सरयू तरंग भली उठै छिन छिन ॥
नभ विबुध बधूटी कुसुमाञ्जलि छूटी,
सब दृग फल लूटी जुटी लखैं एक तन ॥
सखी झमकि झुलावैं पिया प्यारी मुसुकावैं,
वलि वलि बिकि वारैं सब लाल रतन ॥

पद १८०

पिया धीरे से झुलावो सुकुमारी प्यारी हैं ॥
नव सत साज साजे, लखि रति मति लाजे,

अंग अंग छवि भ्राजे, सु डरत भारी है ।।
बहै त्रिविध बयारी, नभ घटा घनकारी,
वर बरस फुहारी, फहरत सारी है ।।
सिया स्वामिनी जू मोरी, प्यारे देखो गहि डोरी,
सखी कहत निहोरी, निठुराई धारी है ।।
सुनि जानकीसुवर पिया, पायन सु परि,
'प्रीतिलता' फूलि करि, तन मन वारी है ।।

पद १८१

झूला झूलो सही मेरे प्राण प्यार से झोंको ना । जब पिय झोंका देत झमकि से डरति सिया सुकुमारि लाल तुम रोको ना ।। जस महराज कुमार कुंवर तुम अधिक लली सुकुमारि लाल झकझोरो ना । 'प्रीतिलता' अलि रसिक शिरोमणि बसिया सरयू कूल लाल मुख मोरो ना ।।

पद-१८२

झूलैं दोउ साजन साज हिंडोर ।
रंग रहस अनुराग रसीले हँसत हँसावत प्रिय मुख मोर ।।
झोंका देत लली लालन जब प्रीतम रस बस करत निहोर ।
'प्रीतिलता' अनुराग राग सुनि झुलत झुलावत ह्वै गयो भोर ।।

श्रीव्यंकटरमणसिंहजी-पद १८३

सु प्यारे जू झूलन की रितु आई झमकि झुकि झूलो झूलना ।
सु प्यारे जू कुसुमित विपिन प्रमोद चलो श्री सरयू कूलना ।।
सु प्यारे जू सब गावें मंगल गीत सखी सब करति कलोलना ।

सुप्यारे जू 'व्यंकट' हिय परम हुलास निठुर बातें जनि चालना ॥

पद-१८४

कदमतर झूलत अवध विहारी।
सुन्दर बन प्रमोद सरयू तट अजब छटा छविधारी ॥
संग सखिन के रमकि बढ़ावत मारत नयन कटारी।
'व्यंकट' किमि कहि सकत युगल छवि कोटि मदन रतिवारी ॥

श्रीसियारामशरणजी 'नवलप्रिया'-पद १८५

प्यारी चलो न झूलन पिय रस बरसे।
तुम दामिनी वरण पिय घन दरसे ॥
यह लखन सरस छवि दृग तरसे।
दै सबहीं ललित सुख विधु कर से ॥
चली लली जू झुलन सुनि सखि वच से।
लखि 'नवलप्रिया' के बड़भाग फल से ॥

पद १८६

चलो देखन जाऊँ री झूलत झुलना।
श्रीसरयू तट कुंज मनोहर कुसुम जहाँ बहुविधि फुलना ॥
रघुनन्दन श्रीजनकनन्दिनी लखि छवि रति मनसिज भुलना।
श्याम गौर वर वरण सरस अति घन दामिनि उपमा तुलना ॥
नख शिख भूषण वसन सोहावन अंग अंग ललित सुधरि खुलना।
'नवलप्रिया' छवि देखि मगन भई लाज कानि गति सुधि कुलना ॥

पद १८७

देखो देखो री झूलत मिथिलेश दुलरी।

संग बहिनि अमित सहचरि सगरी ।।
नव वयस नवल अंग रंग चूँदरी ।
दृग अंजन तिलक हल नथ बेसरी ।।
झोंका अरस परस देति मति अगरी ।
शुभ तड़ित चमक बरषत बदरी ।।
लखि मोहि रमा शारद गौरी रति री ।
लखि 'नवलप्रिया' केअ ड़भाग फल री ।।

श्रीअवधमणीजी-मलार-पद १८८

झूलत सिय नागरि नागर वर ।
सावन सघन निकुंज हिंडोले,
छिन छिन ललकि ललकि लागत गर ।।
हरे हरे परसत सरसत तन,
कंज कलिन्ह कर काम कलभ कर ।
झोंका देत चिबुक गहि किलकत,
चंचल चख जनु मदन वारि चर ।।
बाजत यंत्र जाल करतालन,
बाल सम्हारि उचारि सप्त सुर ।
गावति मेघ मलार 'अवधमणि',
लखि रतिपति गये विसरि कुसुमशर ।।

श्रीरसिकप्रियाजी-पद १८९

सहचरि हरषि झुलावैं झूलत राम सिया ।
रंगमहल बिच रंग हिंडोला मणिमय जड़ित किया ।।

तैसोइ मणिमय भवन सोहावन राजति अमित तिया।
अंश दिये भुज निरखि मगन मन वारति 'रसिकप्रिया' ॥

श्रीकृष्णरामजी-पद १६०

ए दोउ झूलत सरयू तीर।
चन्द्रवदनि श्रीजनकनन्दिनी श्याम वरण रघुवीर ॥
हरि हरि भूमि लता झुकि आई बोलत चातक कीर।
सुंदरि सखियाँ मलार अलापत आनन्द उमग शरीर ॥
गृह गृह ते बनिता बनि आई पहिरे कुसुम रंग चीर।
'कृष्ण राम' छवि निरखि दुहुँन की वारत मणिगण हीर ॥

श्रीजनरघुनन्दनजी-पद १६१

अहो लाल धीरे झूलो लाड़िली डरै छे।
लाड़िल डरै छे अंग उघरै छे मोती लड़ लुढ़कि परै छे ॥
अति सुकुमारि भार यौवन के मृगनयनी चमकि परै छे।
'जनरघुनन्द' सियापिय छवि पै पलक सों पवन करै छे ॥

श्रीरूपरसिकजी-पद १६२

सिया जू हो झूलत फूल भई।
फूली फूली फूल हिंडोले अनुकूली अधिकई ॥
प्रीतम प्राण झुलावत छवि सों शोभा निरखि नई।
'रूपरसिक' रस छके हैं परस्पर मानत नहिं तृपतई ॥

श्रीराम मीतजी-पद १६३

इतनी अरज मोरी मानो तनिक धीरे,
झूलो हो मोरे प्राण ॥

झोंकत हो रोकत नहिं प्रीतम,
तकि तिरछी मुसुकान सान हिय हूलो ।
अरज करत नित बरजो न मानत,
'राममीत' चित आनो बान यह भूलो ॥

पद १९४

झूलन झोंक सँभार कमर,
लचि जैहैं हो बाँके यार ।
कस कठोर चित तोर मोर सुन,
छूटि जैहैं कच भार, हार टुटि जैहैं हो ॥
बरज मान यह अरज 'राममित',
कहि कहि राजकुमारी, हमार जिय जैहैं हो ।

पद १९५

हिय कशकत झूलन झोंक सही नहिं जाती ।
पिय सिसकाति सिय सुकुमारि दरद नहिं आती ॥
लखि लली अली सब भली खड़ी पछताती ।
कोऊ कहत चली मुख मोरि मोरि मुसुकाती ॥
कह्यो राजकुमार न सुनो यार यहि भाँती ।
तन कोमल कमल की कली कठोर की छाती ॥
जिय डरपि लपटि पट पकड़ि गले लपटाती ।
तन कम्पति कहति न कोइ इन्हैं समुझाती ॥
तनि धीरे झूलो बेपीर कमर लचि जाती ।
ऐसो 'राममीत' निरमोहि न मोहि सुहाती ॥

श्रीकामदमणीजी-पद १९६

भूलत लाड़िली नृप लाल ।
लाल विपिन प्रमोद्वन में लगो भूलन लाल ॥
लाल डाड़ी लाल पटरी लाल खम्भ विशाल ।
लाल मणिमय बन्यो आसन लाल तापर लाल ॥
लाल सखि चहुँओर राजित सौंज लीन्हें लाल ।
लाल ललि छवि देखि हरषित देत मधुरी ताल ॥
लाल मोर चकोर बोलत लाल लाल रसाल ।
लाल मणिमय हार हलके लाल ही बनमाल ॥
लाल नासामणि विराजित श्रवण कुंडल लाल ।
लाल सारी जड़ किनारी और वेसर लाल ॥
लाल नथ नासा सियाजू की लाल पहुँची लाल ।
लाल सावन रितु सुहावन लसत अवनि सु लाल ॥
लाल सरस बयार पुरवा परत वारि सु लाल ।
लाल 'कामदमणि' भुलावत जनकजा रघुलाल ॥

पद १९७

भूलन पर भूले दोउ रसमाते ॥
प्रीतम छैल छवीली सीता पान खवावत खाते ।
विपिन प्रमोद कुंज सरयू तट ललित लता लहराते ॥
मणिमय नवल विचित्र हिंडोरा लखि शशि अमित लजाते ।
'कामदमणि' हिय नित्य बसे दोउ मन्द मन्द मुसुकाते ॥

श्रीसीतारामशरणजी 'रामरसरंगमणी'-पद १९८

पिय लखो हो सरयू की बहरिया।
धार भरित अति प्यार हरित तट लेती ललित लहरिया ॥
सावन घन गरजत बरसत सुख सरसत अवध शहरिया।
झूलहु चलि 'रसरंगमणी' अब तजि रघुवीर गहरिया ॥

पद १९९

सरयू के कूल विरचित झूला, झूलत सिया रघुराज आली ॥
रिमझिम रिमझिम बरसत बदरा, भीजत सिय सारी पिय चदरा,
जलकन मुखन विराज आली ॥ लै कर पट रघुवर पटरानी,
विहँसि परस्पर पोछत पानी, लखि सब सुखी समाज आली ॥
गावैं सखी सुहावन सावन सुनि 'रसरंगमणी' मनभावन,
अति आनन्दित आज आली ॥

पद २००

सखि सुखित सरयू कूल सिय रघुवरहिं झमकि झुलावहीं।
सजि हेम हीर हिंडोर युगल किशोर केलि खुलावहीं ॥
कोउ गाय तान तरंग तरल उमंग रंग रचावहीं।
कोउ नचहिं सब अंग लचहिं बाज बजाय मोद मचावहीं ॥
कोउ वाम विहँसि ललाम लली सों लाल नाम लेवावहीं।
सिय लजहि वैन न कहहिं पिय तन नयन सैन बतावहीं ॥
अलि लहहि अति आनन्द सिय रघुनन्द छवि मन भावहीं।
चिरजीव 'मणिरसरंग' जोरी रंगनाथ मनावहीं ॥

पद २०१

धीरे धीरे हो झुलावो मेरे बांके बलमां ।
झोंकाझोंको जनि जोर छैला छाके छलमां ॥
अस कहि सिय डरी लपटानी गलमां ।
मानो मिली सुर सरित जमुन जलमां ॥
लागी गावन सुहावन सुकण्ठ कलमां ।
करैं पवन पिय प्यारी पगे नयना पलमां ॥
बसे ऐसे सीताराम जाके हिय थलमां ।
धन सोइ 'रसरङ्गमणी' भूमि तलमां ॥

पद २०२

ये हो मोरे प्राण धीरे झूलो झूला ।
प्रीतम मम जिय डरत झरत बहु बेंदी के गूहे फूला ॥
फिर परिहौं पायन मन भावन रोपिहौं जबहीं मान को मूला ।
'मणिरसरङ्ग' कहैं सिय पिय सों रमकहु राज कुँवर अनुकूला ॥

पद २०३

झूलत सिया रघुवर लाल ।
लाल मणिमय ललित झूलन लाल खंभ प्रवाल ॥
लाल भूषण वसन तन उर लाल मणि के माल ।
लाल बीरा लसत आनन वदत वचन रसाल ॥
लाल ललना छवि विवश भे लाल छवि वश बाल ।
लाल लली सुखमा निरखि 'रसरङ्गमणी' निहाल ॥

पद २०४

झूलत राम सिय मन हरे ।।

हरे भूषण वसन सजितन बाहु अंशन धरे ।

हरे विपिन प्रमोद तरुगण वेलि फूले फरे ।।

हरे मोरी मोर बोलत नटत घन धुनि करे ।

हरे पिय रघुनन्द रमकत प्रीति फन्दन परे ।।

हरे हँसि मृदु वचन बोलत सरस दोउ सुख भरे ।

हरे श्यामल गौर मिलि 'रसरङ्ग' निज जन करे ।।

पद २०५

झूलत राम सिया रस रसिकै ।

रस भरि गाय गवावत हिलि मिलि हिय सरसावत हँसिकै ।।

खात खवावत पान पान करि अधर सुधा रस फँसिकै ।

रस झूलनि 'रसरङ्गमणी' यह निरखत हियो हुलसिकै ।।

पद २०६

झूलत युगल फूल हिंडोल ।

फूल ते सुकुमार अंगन धारि फूल निचोल ।।

फूलनै की चन्द्रिका शिर फूल मुकुट अमोल ।

फूल के सिय पिय करन अवतंश मिलित कपोल ।।

पहिरि नख शिख फूल भूषण लसत करत कलोल ।

फूलि लोचन लखत छवि 'रसरङ्गमणी' अतोल ।।

पद २०७

झूलत सिय स्वामिनि महरानी ।

श्रीमहराज कुमार झुलावत सजि सनेह सनमानी ।।

प्रीतम प्रीति प्रवल लखि प्यारी पगि प्रमोद मुसक्यानी ।
लखि 'रसरङ्गमणी' दुहुँ अँखियाँ छवि सुखसिन्धु समानी ।।

झपताल-पद २०८

झूलि रहे रामहिय हरित सिय मनहरी ।
हरित घन झरत जल हरित महि वाग भल,
हरित तरु वेलि अति ललित फूली फरी ।
हरित हिंडोल सजि हरित भूषण वसन,
श्याम तन गौर मिलि हरित दुति अनुसरी ।।
हरित रस भरित हँसि हरषि मुख निरखि दोउ,
रमकि रहे जमकि रस केलि कौतुक करी ।
हरित ऋतु चरित पद गाय 'रसरंगमणि'
चहत सियपीय पद प्रीति उर निर्भरी ।।

पद २०९

झुकि झुकि सीताराम सु झूलैं ।
सावन सरयू तट प्रमोदवन घन वरसत अनुकूलैं ।।
कल कामिनी कछोटा कसि कसि दोउ दिशि हँसि हँसि हूलैं ।
मिलि मलार गावत सिय पिय सखि सुनि सुर तिय तन भूलैं ।।
अंचल माल सुधारि सनेही लखि चंचल दृग फूलैं ।
प्यारिहु अलक सँवारि लहै 'रसरङ्गमणी' मुद मूलैं ।।

पद २१०

आली री को झूले इन संग ।।
नाजुकता न विलोकत पर की झोंकत अधिक उमंग ।

रसिकराज कहवावत पै नहिं आवत रस गति ढंग ॥
पिय करजोरि निहोरि हँसायो छायो प्रेम उतंग ।
'मणिरसरंग' राम सिय अंगन वारत अमित अनंग ॥

पद २११

अरज मानो जो अरज मानो, प्यारे मधुर सु रमकनि ठानो ।
झोंकन सों झसकत हिय हमरो खसकत पट परिधानो ॥
रसिकराय कहवाय पाय यश अस रस रीति न भानो ।
'मणिरसरंग' कहैं सिय पियजी कस न मया मन आनो ॥

पद २१२

काहे न धीरे झूलहु प्यारे ।
सुकुमारी स्वामिनी हमारी सियजू डरहिं अपारे ॥
झमकहिं झुकहिं झमकि झोंका लहि भरी रूप रस भारे ।
सुनि 'रसरंगमणी' हँसि रमकत पिय सिय सुरुचि सम्हारे ॥

श्रीरामवल्लभाशरणजी 'युगलविहारिणी'—पद २१३

अपने मैं गुरु को झुलैहौं नव नेह हिंडोर ॥
रचिहौं विमल वर भूषण विमल वर भूषन, भूषन छवि जोर ।
सुचि खम्भ अदंभ के प्यारे अदंभ के प्यारे, चितरंभ के चोर ॥
अवध अवधि निरवधि की अवधि निरवधि की, सरि नेह सुजोर ।
मरुवा अमन मन मानिक अमन मन मानिक, सुठि नेह सुडोर ॥
पटरी प्रतीति सुप्रीति की प्रतीति सुप्रीति की, तेहि बिच गुरु मोर ।
हिय गगन श्यामघन बरसै श्यामघन बरसै, नाचैं मन मोर ॥

प्रेमा परा अलि अवली परा अलि अवली, गावैं सुजस अथोर।
'श्रीयुगलविहारिणी' के प्रभु, विहारिणी के प्रभु, भव बंधन छोर॥

गजल-पद २१४

आज श्रीसद्गुरु मेरे झूलन पै बैठे झूलते।
देखि दासों के हिये पंकज कली से फूलते॥
रस रसिक श्री जानकीवर लेत रस रस रसहिं को।
देत भक्ति सु प्रेम रस जेहि पाय जन जग भूलते॥
नेह मेह सु बरसते सुख सरसते साली सु हिय।
पद परसते छवि दरसते त्रयताप जेहि निरमूलते॥
सम दमादि विज्ञान ध्यान अमानतादिक गुण महान।
गंभीर धीर सु सिंधु पर उपमा न कहुँ कोउ तूलते॥
बोलनि हँसनि चितवनि चखनि जनमन रखनि रुचि सुचिसदा।
चित बसत 'युगलविहारिणी' नित स्वामि कबहुँ न भूलते॥

पद २१५

झूलन विच विलसत श्रीगुरुदेव।
ललित अलाप निरत मधुरे स्वर सुर नर किन्नर सेव॥
नाना भाँति निभृत भूपावली चमकत चन्द्रकलेव।
'रामवल्लभाशरण' एक मुख उपमा कहत लजेव॥

गजला-पद २१६

चलि देखिये मनिकूट पै सखि आज सुखकी लूट है।
ललि लाल अलि भलि वृन्द लै अवली सु जूटै जूट है॥
तरु तरुन श्याम तमाल पिय सिय प्रीतिलता वितान में।

झूलन प्रिया प्रीतम निरखि अति वदन रति पद छूट है ।।
यह युगल विमल विहार श्रीगुरु प्यार प्रद सद सदन पर ।
चहुँओर रसिक चकोर माते पिवै छवि रस घूँट है ।।

पद २१७

ए दोऊ झूलत बने ठने ।
सिया प्यारो पिय के रंग राची पिय सिय रंग सने ।।
यह दंपति की छवि संपति लहि सखियाँ सनेह घने ।
परसि अंग रस बरसि रहीं रस बस करि मन अपने ।।
विपिन प्रमोद लतान वितान कितान महान तने ।
ता बिच 'युगलविहारिणि' के प्रभु लखि सुर जयति भने ।।

पद २१८

हिंडोरे पिय प्यारी राजैं, लखि रतिपति लाजैं ।।
कनक भवन मनि जटित विचित्र चित्र विविध वरन सुख करन हरन मन, त्रिविध पवन मुद कौन बखानै सखि अजब छटा छाजै ।। पिय पीत पट सिय चूँदरी चटक चारु नख सिख विमल विभूषन सुहिय हार, गावैं कल कोकिल लजैनी मृगनैनी अली, साज वाद्य बाजै ।। झुकि झुकि झोकैं अवलोकैं लली लाल बाल रोकैं पल दृग कोकि कोकैं शोकैं जोकैं जुत, 'युगलविहारिणी' रस वस दोऊ, असज साज साजैं ।।

पद २१९

सिय प्यारी अति सुकुमारी पिया के संग झूलैं हो ।।

हरित मणिन के खम्भ दम्भ हर हरित डोर रेशम जगमग कर, हरित जरीन बिछे पटरी पर हरित अवनि सुखमाकर, सरजू कूलैं हो ॥ हरित चन्द्रिका मुकुट विराजैं कुण्डल तरिवन हरित सु छाजै, हरित हार हीरन हिय भ्राजैं निरखि मदन रति लाजैं, हरित दुकूलैं हो ॥ प्यारी पिय सुखकन्द निहारैं प्यारे प्रिया मुखचन्द निहारै, 'युगलविहारिणि' तन मन वारैं, एको पल न बिसारैं, दोउ मुद मूलैं हो ॥

पद २२०

झूलैं जानकी सुजान आज हरित लतान ।
वर विपिन प्रमोद मोद तन्यो है वितान ॥
दोऊ साजे हरो साज हरी हरी मुसुकान ।
हरी हरी सखि गावैं हरी हरी राग तान ॥
हरी हरी दूब खूब महबूब झलकान ।
हरी हरी भरी सरजू तरंग सुख खान ॥
प्रेमप्रभा प्रेमलता छटा भयो है मिलान ।
लखि 'युगलविहारिणी' को सुख भो महान ॥

पद २२१

हिंडोरे झूलत श्रीजानकीबाग ।
दुहुँदिशि सखियाँ मुदित झुलावैं अंग अंग भरि अनुराग ॥
विविध वितान लतान मनोहर तरु प्रफुलित फल लाग ।
अलि अवली गुञ्जरित भली विधि रहस विवस रस पाग ॥
श्रीसिय मोहनि कुंज मनोहर पूरित प्रेम तड़ाग ।

'युगलविहारिणि' प्रभा प्रसारति निरखत जन बड़भाग ॥

ध्रुपद-मलार-पद २२२

आयो री सावन सुहावन पिय प्यारी के हिय सुख छावन । सरयू तीर सुखद कुंज साज साजि झूलन की अलिगन झमकि लागीं झुलावन ॥ कोउ बजावती मृदंग कोउ उपंग वीणा स्वर सो, कोउ निरत करन लागी सावन गावन ॥ 'युगलविहारिणी' उछाह सिन्धु की तरंग सद्गुरु कृपा सुचन्द नित लागीं बढ़ावन ॥

श्रीकौशलकिशोरशरणजी 'कान्तिलता'-पद २२३

श्रीसतगुरु के सदनमां हो पिय झूलैं झुलनमाँ ।
संग लिये मिथिलेश दुलारी श्रीसरयू के कुलनमाँ ॥
देव वधू सब नाचहिं गावहिं हरषत बरषै फुलनमाँ ।
उपमा खोजि खोजि कवि हारे कतहूँ न मिलत तुलनमाँ ॥
'कान्तिलता' के जीवन धन दोउ सब सुख के हैं मुलनमाँ ।

पद २२४

सदा झूलो मेरे दिलवर बढ़े उत्साह नया ।
जियो युग-युग प्रिया प्रीतम यही है चाह नया ॥
लता वितान वनप्रमोद तीर सरयू के,
हिंडोला अति विचित्र मणिनमय तैयार नया ॥
अनेक यंत्र बाजते मृदंग वीणादिक,
अलापती हैं गानकला सजे साज नया ॥
यही है चाह सदा नाथ अलि चकोरिन की,

बैठे झूलन पै दिखाते रहो मुखचन्द नया ।।
यही अभिलाष 'कान्तिलता' श्रीसियाजू की,
बढ़ै दिन दिन सदा सनेह सुख सुहाग नया ।।

श्रीमौनजी पद – २२५

सावन सुहायो सुख नवल हिंडोलना में,
झूलैं मन भावन के संग मन भावनी ।
नवल नवेली राजें नवल शृँगार साजे,
बाँसुरी मृदंग वाजे गावें कल ग्रामिनी ।।
गाजें घन मंद मंद पवन झकोरें दै दै,
अति अनुराग में झुलावें गज गामिनी ।
प्यारी घन घोर सुनि पिया से लिपटि जात,
'मौन' घन साँवरी घटा में सोहैं दामिनी ।।

पद २२६

सावन समाज साजि राजे पिया प्यारी आज,
संग में सहेली झूला झमकि झुलावती ।
चन्द्रमुखी वाला वृन्द नवल सिंगार साजे,
दामिनी प्रभा सी अंग अंग दरसावती ।।
बांसुरी मुर्चङ्ग वीन मजीरा मृदंग बाजै,
सप्त स्वर माधुरी मल्हार तान गावती ।
द्रुमन लता नवेली मंजरी वितान छाये,
फूली फुलवाई मकरन्द चुमकावती ।।

डोले रसमाते मन मदन मिलिन्द वृन्द,
गुञ्जत सुहाये लता लूम लूम आवती।
मधुर मयूर कल कोकिला कपोत कीर,
विहँग अनेक धुनि मुनियाँ सुनावती॥
पिऊ-पिऊ पपोहा विरहिनी को मारे बान,
कोकिला की कूकैं मानो मदन जगावती।
शीतल सुगन्ध मन्द पवन झकोरे देवैं,
सरयू हिलोरैं दोउ कूल चली आवती॥
भूमि हरियाई बीर बहूटी सुहाई मानो,
मेहदी रचाई रितु शोभा सरसावती।
घुमड़ घटान घन झमकि झलान बूँदैं,
दामिनी लहू कै हूकै हूलसी मचावती॥
मन्द मन्द गाजैं घन गगन निशान बाजैं,
देवन की वाला फूलमाला वरसावती।
पीत पट प्रीतम ओढ़ावैं मन भावनी को,
प्यारी मन भावन को चून्दरी ओढ़ावती॥
प्रेम रस पागे अनुरागे अंग अंग दोउ,
दै दै गल बहियाँ प्यारी हँसति हँसावती।
लै लै कै बलैयाँ सखि पैयाँ परैं वार-वार,
सुखमा निहार मन मुदित सिहावती॥
सुखमा समान कहूँ उपमा न खोज पाई,
अंग प्रति कोटि काम कामिनी लजावती।

झूलन विहार सुख शेषहूँ न गाय सकै,
'मौन' की कहै को पार शारदा न पावती ॥

पद २२७

दोऊ झूलैं मिलि झूला झुकि झूमि-झूमि ॥

शीतल सुगन्ध मन्द पवन झकोर लेत, सुखमा सुहाई सर नन्दिनी हिलोर लेत, घन गुमड़ाई उमड़ाई अमड़ाई, चपला की चमक आई घूमि-घूमि ॥ बाग वन बेली तरु कदम तमाल पुञ्ज, मालती सुहाई मानो मदन बनाई कुञ्ज, फूली फुलवाई अमड़ाई उमड़ाई मानो, मिलत परस्पर लूमि-लूमि ॥ गुञ्जत मिलिन्द रसमाते उनमत्त डोलैं, कोकिला कपोत कीर विहंग अनेक बोलैं, दादुर अलापैं पिय पपिहा कलापैं, रटि-रटि के मचाई बड़ी धूमि-धूमि ॥ विपिन प्रमोद वन दशहूँ दिशान सोहैं, विमल विचित्र अवलोकि मुनि मन मोहैं, शोभा अधिकाई वीरवहूटी सुहाई हरियाई-हरियाई छाई भूमि-भूमि ॥ सावन समाज साजैं सुमुखि सुनैनी राजैं, मंजोर मुचंग वीन मधुर मृदंग वाजैं, बांसुरी बजावैं गावैं मधुर मलार तान, नचत मोर गन घूमि-घूमि ॥ कदम की डारी झूला रेशम की डारी डोर, किशोरी किशोर दोऊ झूलत मचकि जोर, गलभुज दीन्हें 'मौन' आनन्द न थोर, मुसुकात परस्पर चूमि-चूमि ॥

श्रीसियाशरणजी 'प्रेमअली' पद २२८

जय रहे अवधेश ललन मिथिलेशलली की जय रहे ॥

पिया साँवरो सोहैं घटा सिय दामिनी सी छा रही ।
बातैं मधुर रस रहस के आनन्द जल बरषा रहे ।।
अति रंग भरे झूलैं दोऊ दोउ ओर सखियाँ झुलावहीं ।
झोंका सरस झुकि झूमि झूमि भूषण झमाझम बज रहे ।।
चहुँओर से नागरि खड़ी बाजे सु मधुर बजावहीं ।
कोई तान लेत तरंग सी चातकि मयूरि सी ह्वै रही ।।
तिरछी नजर हँसि हेरि हेरि फुल गेन्द की चोटैं चले ।
'श्रीप्रेमअली' यह चाहती नित नयन में छाये रहें ।।

श्रीरामशरणदासजी-पद २२९

नई सावन नई मेरो साँवरो नई सिया युगलकिशोर ।
नई-नई डरिया कदमतर नई-नई रेशम डोर ।
नई-नई सखियाँ झुलावन आई नई झूलें राघो चितचोर ।
नई-नई भूषण वसन राजे नई-नई नयनन कोर ।।
नई-नई चातृक भणत वाणी नई-नई दादुर शोर ।
नई-नई पुरवा रमकि वहे नई मेघवा घनघोर ।।
नई-नई बुंदिया परन लागी नई-नई बोलत मोर ।
नई-नई सरयू बहन लागी नई-नई दिशा घनघोर ।।
नई-नई विपिन प्रमोद शोभा नई-नई चित के चकोर ।
नई-नई 'रामशरण' दोऊ नई-नई रस में बोर ।

पद- २३०

नए रसिया नई सावन नई सिय नवल हिंडोल ।
नई-नई अंग सजि भूषण नये पट नवल निचोल ।।

नई-नई गछिया सुमन नई नई-नई अलिगन डोल।
नई गुंजन स्वर मोहत श्रुति सुनि नई-नई बोल ॥
नई-नई त्रिविध बयरिया वहत रमकि चित्त डोल।
नई-नई चन्द्र वदनि सिय पिय संग करत कलोल ॥
नए घन उमड़त घुमड़त झहरत बुन्द अतोल।
दोउ लपटत गर लागत परसत विहँसि कपोल ॥
नई-नई सरयू लहरिया लहरत नव रस घोल।
नई अलि वीणा बजावत गाये राग अनमोल ॥
मुख नई पानन विरिआ देत हरषि सखि गोल।
नये हिय 'रामशरण' दोऊ निवसहिं रसिक अमोल ॥

पद २३१

झूलत जनकजा रघुलाल।
सरयू पुलिन प्रमोद वन जहँ ललित कंज प्रवाल ॥
लाल डांड़ी लाल पटरी लाल खम्भ रसाल।
लाल झाड़ी लाल डारी लाल कृत्रिम जाल ॥
लाल लाड़िली लाल शोभा लाल मणि की माल।
लाल चहुँदिशि ठाढ़ि सखी सब निरखि नैन विशाल ॥
लाल भूमि प्रमोदवन में लाल कदम कमाल।
लाल ललित लुनाई लखि लखि 'रामशरण' निहाल ॥

पद ३३२

झोंकवा न दीजै राघो कमर लचाकिजैहैं टुटि जैहैं गरवा के हार रामा।
आई गयो सावन उमरि आये मेघवा विजुली चमके बहुबार रामा ॥

सरयू किनारे प्यारे रच्यो हैं हिंडोलना झुलवत प्राण अधार रामा ।
डरपि डरपि कहें सिय शशि वदनी सुनिएत राजकुमार रामा ॥
अवध वागवर सघन कुंज में नित नई होत बहार रामा ।
हरे हरे चहुँदिशि अवनी विराजै बुंदन परत फुहार रामा ॥
'रामशरण' पिया निठुर भयो कस गुनन के आगार रामा ।
सिसकि-सिसकि भर्णें जनक लड़ैती मानो तो बतियाँ हमार रामा ॥

पद २३३

झूलन की झाँकी अजब बनी है प्यारी संग झूलैं पियरवा रे ।
साँवली सुरतिया पै गोरी सिया सोहति अँखियनमें सोहैं कजरवारे ॥
भूषन बसन राम सिय राजत रति अनंग छबि छोरवा रे ।
सरयू तीर प्रमोद विपिन में हरि लीन्हों मेरो हियरवा रे ॥
घन गरजे चमकै दामिनियाँ सुनि-सुनि बोलत मोरवा रे ।
नान्हीं-नान्हीं बुंदिया परत भूमि पर धीरे-धीरे बहत समीरवा रे ॥
'रामशरण' दम्पति सुखमा लखि नैनन बहै जलधरवा रे ।
झूलन की झाँकी में चित नहिं जाको जनु भूंकत कुकुर सियरवा रे ॥

पद १३४

तेरी बांकी झुलन पर बलिहारी ।
बाँकी सी खम्भन बाँकी सी डाँड़ी बाँकी सी पटुली मनहारी ॥
बाँकी सी रन्ध्रजाल तामें शोभित बाँके बेलनमाँ सुघरकारी ।
बाँके से पीताम्बर सुठि शोभित बाँकी सी नील विमल सारी ॥
बाँके से क्रीट मुकुट शिर राजै, बाँकी सी चूरामणि न्यारी ।
बाँके से श्याम गौर पिया प्यारी 'रामशरण' के हिया फारी ॥

पद २३५

रमकि रमकि झूलें नवल हिंडोलना सावनकी आई है बहार रामा।
चलिये तो जाय श्रीअवध नगरमें, जहाँ लगे मदन बजार रामा॥
पिया-पिया-पिया-पिया रटत पपीहा, मोरवा करत पुकार रामा।
चात्रिक कीर चकोर भणित बाणी झिंगुर झंझाकार रामा॥
सरयूतीर सघन कुंजन में जुरि आई कदमकी डार रामा।
हरे-हरे चहुँदिशि अवनि विराजे बूंदन परत फुहार रामा॥
गलबहियाँ दीन्हें पिया प्यारी झूलत प्राण अधार रामा।
'रामशरण' दोऊ रूप मगन भये निज उर विहरें हमार रामा॥

पद २३६

सरयू किनारे कदम जुरि छहियाँ रसिया हिंडोला लगौले बा॥
सिया पिया रूप माधुरी दरसे कोटि मयंक लजौले बा।
श्याम अंग झीने पट झलकत जुलफन फुलेल लगौले बा॥
राजकुमर सुकुमार छबीले जुवतिन पर जदुआ चलौले बा।
'रामशरण' दोउ रूप रंगीले सावन के मौज देखौले बा॥

श्रीमधुसूदनाचार्यजी 'मधुपअली' ध्रुपद-पद २३७

गरजत मतंग मतवारे मेघ कारे कारे दामिनी दमंकत चमंकत। प्रफुलित प्रमोदवन कुंजकुंज आलीगन हिंडोल साज साजि हिय उमंगत॥ पीय प्यारी को रिझावती मृदंग गमकावती झनंक झाँझ सनक स्वर ताल तमंकत। 'मधुपआली' परमानन्द लखि लखि छवि होत दंग दम्पति रस झूलन झमंकत॥

ध्रुपद-केदार-पद २३८

सियवर झूलैं झूमि झूमि।

झम-झम-झम दै दै-दै झोंक, दै दे-दे झोंक मृदंग वीणा आदि बाजैं लय सों स्वर सितार। नाचहिं गावहिं अलिगन सरस राग सावन, हरषि निरखि छवि को करति जै-जै-जैकार ॥ गरजत घन अति घुमंक बिच बिच दामिनि दमंक, छाइ रह्यो अमित रंग वनप्रमोद मध्य झार। पिय को रमक प्यारी की ओर प्यारी की रमक पिया की ओर, 'मधुपअली' छवि पै जात वारि-वारि॥

पद २३९

जित देखो तितै दोऊ झूला झुलैं।

श्याम गौर सुखमा अथोर बहु काम वाम उपमा न तुलैं ॥
साज सावनी सजि मनभावत छवि रवि लखि हिय कमल फुलैं।
दम्पति सुख सम्पति उछाह भरि दिये गलबाँह सु मोद मुलैं ॥
अवध स्वामि श्रीसतगुरुसदनहिं अवलोकिय सरयू के कुलैं।
जड़ चेतनहिं ग्रन्थि ग्रन्थित जिय सो ग्रन्थी बिनु श्रमहिं खुलैं ॥
निगम नेति करुणा निकेत गुरु शरण किये हिय हरन शुलैं।
युगल विहार बहार 'मधुपअली' लली लाल भली भाँति जुलैं ॥

श्रीराजबहादुरजी-पद २४०

छवि छाई चहुँ धाई ऋतु पावस भली,
झूलैं हेम के हिंडोरा राम जनकलली।
पिय झमकि झुलाई सिय बेसरि हली,

श्रम सीकर सुहाई मुख कमलकली।
जब सिय सिसकानी तब बोली हैं अली॥
झोंका दीजिये सम्हारि सुकुमारि मैथिली।
अवध आनन्द लूटो गलिय गली,
'राज' थोरे दिन बाकी ढेर गयो हैं चली॥
('राज' हिय अभिलाष सिय कृपा से फली)

श्रीसियालालशरणजी 'प्रेमलता' पद २४१

सियजू झूलि रहीं बगिया में दशरथराजकुमर के संग॥
नख शिख सजे सिंगार अनूपम लखि छवि लजहिं अनंग।
चहुँदिशि खड़ी नवल ललना गण गावहिं भरी उमंग॥
वीणा वेणु सितार सारंगी मंजीरा सु मृदंग।
ताल तमूरा किंकिणि नूपुर बाजि रही मुरचंग॥
झोंका देहिं झमकि प्रमुदित मन पट फहरात सुरंग।
दादुर कीर कोकिला बोले नाचत मोर सुढंग॥
रिमझिम रिमझिम मेहा बरषै चढ़ि रहि सरजू तरंग।
सुरतिय निरखि सुमन बहु बरषै हरषित उड़हिं विहंग॥
'प्रेमलता' यह रसिकन सम्पति युग-युग रहे अभंग।

पद २४२

हिंडोरना में झुलि रहे सियलाल।
मैं सरयू जल भरन गई री, निरखत भई बेहाल॥ १॥
कहा कहुँ छबि अनुपम आली, सुखमा को जनु जाल।
चहुँदिशि सघन लता तरु शोभित, संग मुग्ध बहु बाल॥ २॥

पाकर जम्बु कदम्ब बकुल वट, श्याम तमाल रसाल ।
फूलित फलित ललित तरुबर सब, त्रिविध समीर सुलाल ।। ३ ।।
बोलत मोर मेघ नभ घोरत, चोरत चितहिं सुकाल ।
गावहिं अली मलार मनोहर, मुदित नचहिं दे ताल ।। ४ ।।
दम्पति परम प्रसन्न परस्पर, झूलहिं गर भुज डाल ।
अवलोकहिं सुर चढ़े विमाननि बरषहिं सुमन सुमाल ।। ५ ।।
बार-बार मुसिकाय बिलोकत, सिय मुख जनरूचि पाल ।
'प्रेम-लता' अलि करहिं आरती, साजि सु कंचन थाल ।। ६ ।।

श्रीहरिजनजी-पद २४३

भये उनींदे नयन ललन अब झूलन ते उतरे ।।
आलस बस अंग-अंग शिथिल सब मतवारन्ह निदरे ।
झुकि-झुकि जात उभकि झोंकन्ह ते कहुँ अति झुकि न परे ।।
अलिगनहूँ सब स्रमित भई अति ज्यों त्यों काज सरे ।
'हरिजन' स्वामिनि रैन गई बहु चलि अब सैन करे ।।

श्रीसियामोहनीशरणजी 'मोहनीअली' २४४

चलो देखें सिया रघुवीर झुलनमाँ झूलि रहे ।
रहि-रहि झोंका देत अली सब उड़त सुरंग रंग चीर ।
झोंकन में अलकैं झुकि झूमत मनहुँ भ्रमर की भीर ।
मन मृग 'मोहनि' को बेधत है नैन तीर बेपीर ।।

पद २४५

पड़ल हिंडोरा देखो कदम की डारी रामा, हरि-हरि झूलि

रहे अवध विहारी रे हरी ।। रहि-रहि झोंका मारैं श्रीजनक-दुलारी रामा, हरि हरि गावैं सखीजन सुकुमारी रे हरी ।। अलकैं बदन पर झूमैं घुँघुरारी रामा, हरि हरि उदै मानो चन्दा घन टारी रे हरी ।। 'मोहनी' कहति यह अरजी हमारी रामा, हरि हरि हिये बसो दोऊ पिय प्यारी रे हरी ।।

पद २४६

आजु तो अवध सैयाँ झमकि झुलाऊँगी ।
मीठी-मीठी तान गाय मन्द-मन्द मुसुकाय,
झोंकन को मारि हिय सुख न समाऊँगी ।।
लट सुरझैहौं उरझैहौं मन आपनो री,
कंठ सों लगाय हिय तपनि बुझाऊँगी ।।
पान को पवैहौं ताको उगिलन पैहौं आली,
'मोहनी' वदन लखि सुख न समाऊँगी ।।

पद २४७

साजन धीरे-धीरे झूलो प्यारी डरपति हैं भारी ।
अतिशय झोंका देहु न लालन सिया हैं सुकुमारी ।।
थहरैं अंग लहरि लट मुख पै फहरैं पट सारी ।
'मोहनिअली' बिहँसि रघुनन्दन गलबहियाँ डारी ।।

पद २४८

नवल दोऊ झूलत नवल हिंडोर ।।
नवल नागरी झमकि पेंग को मारति झुकि झकझोर ।

नवल वसन नव तन में राजें नवल सुरंगी छोर ॥
नवल कुंज सुन्दर द्रुम छहियाँ नचत नवल बनमोर ।
नवल तान नव नवला गावति नवल सप्रेम झकोर ॥
नवल दामिनी जनक लड़ैती नव घन अवध किशोर ।
'मोहनि' प्रेम छके दोउ झूलत नवल नेह रस बोर ॥

पद २४९

वलिहारी श्रीचन्द्रकला की ।
झुलुवा झमकि झुलावति मृदु हँसि रस घतियन की करत चलाकी
चंचल हार वार संग अरुझत झुकि झुकि झोंकन की छवि बाँकी
सिय मन 'मोहनि' सरस सहेली अलवेली श्रीअवध लला की

पद २५०

तजु अब मानिनी प्रिय मान ॥
चलहु झूलन झमकि झूलन मारि पिय दृग सान ।
उमड़ि बादर घुमड़ि छाये करत कोकिल गान ॥
उतै प्रीतम विवस ठाढ़े कुंज पुंज लतान ।
चौंकि छिन छिन बाट जोहत लगत मनसिज बान ॥
चटक मृदु मुसुकाय सुंदरि नवल दृग ललचान ।
चली नवल निकुंज 'मोहनि' मुरि नवल भ्रुव तान ॥
झमकि झोंका मारि झूलन लगी नवल सुजान ।
छिटकि नव छवि रही चहुँदिशि नवल भुज. अरुझान ॥

पद २५१

झूला झूलो मेरी प्यारी वारी जनकदुलारी ना ।

सुठि सुकुमारी रूप उजारी राजकुमारी ना ॥
चाल गयन्द मन्द बोलनि पिय मन रिझवारी ना ।
'मोहनि' झमकि तिहारी झूलनि पै वलिहारी ना ॥

पद २५२

झूला झूलो मेरे प्यारे दशरथ राज दुलारे ना ।
सुठि सुकुमारे प्राण अधारे अँखियन तारे ना ॥
अलक सुधारे जुलुफन वारे रस मतवारे ना ।
हिय रिझवारे 'मोहनि' प्यारे दृग रतनारे ना ॥

पद २५३

सखि आज झुलनवाँ लालहिं झमकि झुलैहौं ।
हँसि हँसि के मधुरी मधुरी तान सुनैहौं ॥
लखिके बाँको मुसुकान अधिक सुख पैहौं ।
रहि रहि के झोंका देइ मलारहिं गैहौं ॥
बिखरी अलक निज कर सों जाइ बनैहौं ।
अपने वश में हँसि सिय पिय को करि लैहौं ॥
लखि के छलिया छवि व्याकुल दृगन जुड़ैहौं ।
कहैं 'मोहनिअली' ललकि पिय कण्ठ लगैहौं ॥

पद २५४

झूलत श्वेत हिंडोरा राम ॥
श्वेतहिं चँवर लिये सखि ठाढ़ी श्वेतहिं रूप ललाम ।
श्वेत सिंगार पिया प्यारी को लाजत कोटिक काम ॥

श्वेत जड़ाउ जड़े खम्भन में संगमरमर के धाम ।
'मोहनिअली' निरखि दोउ मूरति बेगि बिकी बिन दाम ।।

श्री सद्गुरुरामशरणजी मधुरलता पद-२५५

भूलत झकझोरत निडर पिया ।।
सावन प्रथम अवधपुर भूलन प्रभु सयान लड़िका हैं सिया ।
लम्बि लम्बि पेंग भूलो जनि रघुबर हम डरपति तुम निडर जिया ।।
प्रभु मुसुकात निहारि सखिन तन ए हारी हम जीत लिया ।
'मधुरलता' दूसर सावन लौं प्रभु हरिहौ तब हँसेंगी सिया ।।

पद २५६

झुलावो लाड़िले निज रानी, परम प्रेम जिय ठानी ।।
नेह नाह को निरखि नवेली अतिशय जिय सुख मानी ।
मृदु मुसुकाय लोभाय छयल मन गहि कर सो पिय पानी ।।
बैठि परस्पर हेरत दोउ छबि चितवन अमृत सानी ।
गलबहियां दै भूलन लागे कहि कहि मधुरी बानी ।।
देखि छटा कृतकृत्य अलीगण बिनहीं दाम बिकानी ।
'मधुरलता' सजि साज नचत ढिग पियपर भई दिवानी ।।

पद २५७

लिये भूलैं रसीले सुघर गोरी ।।
श्याम वदन पर जुलफैं छोड़े लखत बिहँसि अलियन ओरी ।
मारत नैन बान तकि तकि के विवश भई सब लखि जोरी ।।
जो जहँ रही सो तहीं विवश भई छूटि गई कर से डोरी ।
'मधुरलता' लखि भई बावरी फिरति जगत ते मुख मोरी ।।

पद २५८

झूला झूलैं छबीले रसीले पिया ॥
मणिमय ताज सुभग शिर सोहैं नागिनि जुल्फ डसायो हिया।
कुण्डल कान नयन वर बाँके नाशामणि बिनु मोल लिया ॥
अधर लाल मुसुकान माधुरी काहि कहौं जो जखम किया।
'मधुरलता' नख शिख लखि शोभा पिय हिय तन मन अरपि दिया

पद २५६

झूलत दोउ रसिया आलस माते।
कहुँ सिय पिय पर कहुँ पिय सिय पर झुकि उठि पुनि मुसकाते ॥
तोड़त बदन लेत अँगड़ाई छनहीं छन जमुहाते।
पिय कच सिय श्रुति फूलन अँटके हँसि हँसि दोउ सुरझाते ॥
प्रेमालस में छके छबीले गलबहियाँ लपटाते।
'मधुरलता' ते धन्य धरातल जे यह छवि हिय ध्याते ॥

श्रीरामकिशोरशरणजी 'रसमोदलता' पद-२६०

सरयू कूले झमकि दोउ झूलें।
अलकें आइ रहीं मुख ऊपर हुमकि हुमकि दोउ हूलें ॥
दोउ मुखचन्द्र चकोर होइ दोउ निरखि निरखि दोउ भूलें।
हँसि हँसि पेंग बढ़ावत दोऊ श्याम गौर सुखमूलें ॥
नई नई केलि करत झूलन पर रसिकन मन अनुकूलें।
यह 'रसमोद' अनूपम अदभुत इन सम और न तूलें ॥

पद-२६१

तनिक धीरे झूलो हो बाँके यार ॥

तुम तो अपने सुख चाहत हो दलकत हृदय हमार ।
हम नाजुक तुम प्रवल कठिन हो ताके कछु न विचार ॥
तुम तो अपने सुख विहवल हो प्रवल मदन के धार ।
सुनि प्रीतम लिपटाय हृदय लगि 'रस' बस तन न सम्हार ॥

पद २६२

झूलत प्यारे राजदुलारे झमकि झुलावत गोरी गुजरिया ।
आज हिंडोरे झूलत सिय पिय रिमझिम वरसत कारी बदरिया ॥
पड़त फुहार पीत पट भींजत जनकलली जू की सुरंग चुनरिया ।
क्रीट मुकुट लट कुँवरि सँवारत चिकुर चन्द्रिका पिय मन हरिया ॥
रमकि झमकि पिय पेंग बढ़ावत झुकि झुकि जात कदम की डरिया ॥
श्रीजनकलली सरयू जल परसत नभ से होत सुमन की झरिया ।
कबहुँ झमकि पिय सिय को झुलावत गावत मोद भरिराग कजरिया ।
'रस' वरषत जब करत चकोर दृग सखि छवि लखि जावें बलिहरिया ॥

श्री सियारामशरणजी 'मधुरीलता' पद-२६३

घनश्याम घुमड़ि घन आयो री ।
कटि पट पीत दामिनी दमकैं कीरति घन घहरायो री ॥
पूरब पवन प्रेम पुरवइया मिथिला झरी लगायो री ।
सुकृती शशि सम्पन्न पाय रस नृपति शालिफल पायो री ॥
अर्क जवाश विनास शोक भयो अलि चातक सुख पायो री ।
पिय तरु लता ललित रुचि 'मधुरी' उरझि अधिक छवि छायो री ॥

पद २६४

हिंडोरे श्वेत सु झूलत राम ।

श्वेत चाँदनी फरस श्वेत सुठि श्वेत मणिनमय धाम ॥
रजत श्वेत मणि जटित खम्भ गुण मणि मरुवा मणि दाम ।
पटुली श्वेत चन्द्रमणि चमकत लसत दाम घनश्याम ॥
श्वेताम्बर सिय सुभग सुतन में गौर वरण अभिराम ।
श्वेत शृंगार सखिन सब साजे भूषण श्वेत ललाम ॥
छत्र श्वेत युग चँवर चलावति चन्द्रमुखी वर वाम ।
फूले श्वेत सुमन वन उपवन गुंजत मधुप तमाम ॥
श्वेत सु कीर हंस पारावत पढ़त पीय सिय नाम ।
शोभा सार श्वेत लखि 'मधुरी' श्वेत भयो रति काम ॥

पद २६५

लसत दोउ श्यामा श्याम हिंडोर ।
विद्युत छटा छनहिं छन छहरति छिति छावति छवि छोर ॥
श्याम रंग रस बोर डोर कल झूलत श्यामल गोर ।
श्याम घटा घनघोर मोर पिक शोर करत अति जोर ॥
श्याम तमाल लता नव कुंजन झूमि झुकी चहुँओर ।
सुरन हरषि वरसत कुसुमांजलि 'मधुरी' मोद न थोर ॥

पद २६६

झांकी झलामल झलकै झूलत झकझोर ।
अलियाँ झुलावैं झोकैं झुलावैं झोकैं, झमकत चहुँओर ।
झीनी झरैं घनवारी झरैं घनवारो, हरषै मन मोर ॥
'मधुरी' सु झुकि झुकि झाँकैं, सु झुकि झुकि झाँकैं, छवि पर तृणतोर ॥

पद २६७

झूलत प्राण वल्लभ लाल ।
रंगभरि सव सब संग झूलत अंग फूलत हाल ॥
वदत सखियाँ सब परस्पर करत रस वस ख्याल ।
नाम पिय को लेहु प्यारी हँसत दै दै ताल ॥
माण्डवी कहि भरत पोषक करत जग प्रतिपाल ।
उर्मिला कहि वेगि वेधत लच्मन की चाल ॥
कीर्तिपति श्रुतिकीर्ति गावति करत उर अरिशाल ।
लेहु पिय को नाम सिय जू वेगि करहु निहाल ॥
आदि रा पुनि अन्त म मृदु रमन रसिक रसाल ।
कहति सखियाँ हम न मानब चारु चतुरी चाल ॥
भनत 'मधुरी' रंग वरषत भरत मानस ताल ।
चित्त करषत मोद सरसत शालि हरषत बाल ॥

श्रीविदेहजाशरणजी 'प्रेममोद' पद २६८

आजु सावन वीज सुहाई ॥
मणिपरवत पर जनक किशोरी पियसंग झूलन आई ।
तरु रसाल में नवल हिंडोरा जगमगात छवि छाई ॥
अलिगन झूलि झुलावहिं गावहिं नटति सु साज बजाई ।
श्याम घटा नभ दामिनि दमकत त्रिविध पवन सरसाई ॥
दादुर मोर पपीहा कोयल चहुँदिशि शोर मचाई ।
'प्रेममोद' तिलई तट झूलन रसिकन को सुखदाई ॥

पद २६९

दुलहिनि संग दूलह झूलि रहे ।

मौरी मौर सुभग सिर धारे नव जोवन दोउ उमग गहे ॥
ग्रथित चूनरी पीत उपरना कर कंकन छवि अधिक लहे ।
नासामणि अधरन पर हलरत मंद हँसनि दृग चहनि चहे ॥
कर पंकज पद मेहदी जावक अनुपम शोभा कौन कहे ।
ब्याह विधान कराइ सहेलिन गावति मंगल तालन दे ॥
'प्रेममोद' सब ऋतु की लीला रासमण्डल मधि नित्य बहे ।

पद २७०

झूलन पर अरुझि गये पिय प्यारी ।

भूषण से भूषण पट पट से श्याम गौर मनहारी ॥
जंघा जानु उरु कटि कटि से नवल अंग छवि भारी ।
उर उर से मुख मुखनि मिलाये भुज से भुज अँकवारी ॥
तन मन प्राण जीव एक कीन्हें प्रीति सुरीति अपारी ।
'प्रेममोद' यह अनुपम अरुझनि निरखत अलिन सुखारी ॥

पद २७१

सरयू कूले बना रहे सावन ।

पिय प्यारी नित झूला झूलैं अलिगन झमकि झुलावन ॥
घन गरजनि चमकनि दामिनियाँ मोरवा बोल सुनावन ।
बाजहिं वीण मृदंग मुरलिका राग रागिनी गावन ॥
छत्र फिरावन व्यजन चलावन दुहुँदिशि चँवर दुरावन ।

मन्द हँसनि चितवनि रस बोलनि नैनन सैन चलावन ॥
अतर पान माला की पहिरन अरस परस मन भावन ।
भूषण वसन अंग अरुझावन भुज से भुज लपटावन ॥
गेंद उछारन कमल फिरावन रसिकन हिय सुख छावन ।
'प्रेममोद' तृण तोरि अशीषत राई लोन उतारन ॥

श्रीसन्तशरणजी 'मस्त' पद २७२

अरे रामा रिमिझिमि बरसे पनियाँ झूलें राजा रनियाँ रे हरी ॥
घिरि आये घुमड़ि घनकारे, परैं रिमिझिमि बुन्द फुहारे,
अरे रामा चमकि रही दामिनियाँ ॥ अँग अँग में भूषण निराला,
गरे सोहैं मणिन की माला, अरे रामा कमर पड़ी करधनियाँ ॥
दोउ झूलैं सुरंग हिंडोला, बिन दाम लेत मन मोला,
अरे रामा मन्द मन्द मुसुकनियाँ ॥ गल बहियाँ दिये दोऊ झूलें,
हो 'मस्त' हिये दोऊ फूलैं, अरे रामा भूलें नहिं चितवनियाँ ॥

श्रीरामप्रसादशरणजी 'दीन' पद २७३

मोरा छाँड़ि दे अँचरवा मैं तो न्यारी झूलूँगी ॥
झोंका दीन्हीं अति भारी फारी सारी जड़तारी,
अब बातों में तिहारी मैं तो नाहीं भूलूँगी ॥
बहु भूषण हमारे गिरे टूटे नग सारे,
जनि छेड़ो छलकारे तोसे नाहीं बोलूँगी ॥
हिय काँपत हमार जिमि तरुवर डार,
पैयाँ लागूँ बार बार मुख नाहीं खोलूँगी ॥

तुम गावो लैके वीणा कोउ पावस नवीन,
विनती करो ह्वै के 'दीन' तब साथे झूलूँगी ॥

श्रीमोदलताजी-पद २७४

झूलत नवल रसिया लाल ।
नवल सिय संग नवल शोभा नवल रंग रसाल ॥
नवल भूषण वसन चमकन नवल चहुँदिशि बाल ।
नवल तान तरंग उमड़े नवल सुख सरसाल ॥
नवल मुसुकन नवल चितवन नवल वचन रसाल ।
नवल हास विलाश नवलहिं झोका दै दै चाल ॥
नवल नित्य किशोर राजत नवल सुख सब काल ।
नवल सुरति विनोद चिन्मय 'मोदलता' निहाल ॥

श्रीमोदमंजुजी-पद २७५

आज दोउ झूलैं श्रीजानकी बाग ।
रसिकन की संपति दम्पति उर उमगि उमगि अनुराग ॥
दै गलबाँहि परस्पर हेरत नेह सु अचल अदाग ।
'मोदमंजु' अलि झमकि झुलावहिं भारी भरी सुहाग ॥

पद २७६

सजन आज झूला झुलाना पड़ेगा ।
छबीले छली छल भुलाना पड़ेगा ॥
किया हैरान था मुझको जो फागुन के महीने में,
कसर सारी गिन गिन चुकाना पड़ेगा ।

उतरकर आप झूले से खड़े हो जाइये साहब,
कानूनन न हीलो बहाना चलेगा ॥
गहो डोर रेशम कमल कर में प्रीतम,
रसीली सिया को झुलाना पड़ेगा ।
बढ़े पेंग लम्बी भूलकर न हरगिज,
रसे रस रसिकवर बढ़ाना पड़ेगा ।
खता माफ चाहो तो जुरमाना यह है,
सिया के चरण सिर झुकाना पड़ेगा ।
कियो सोई प्रीतम रसीले रसिकमणि,
'मोद' स्वामिनि को कण्ठ लगाना पड़ेगा ॥

श्रीसियावल्लभशरणजी-पद २७७

झूमत झूलन पै दोउ आवत ॥
मन्द मन्द पग धरत मनोहर नूपुर धुनि सरसावत ।
राम रसिक वर सिय रमणी संग गति गयन्द सकुचावत ॥
उमड़ि घुमड़ि घिरि आई बदरिया दामिनि दुति दमकावत ।
रमकि पवन पुरवाई सुखद अति अनुपम रस उपजावत ॥
कोउ सखि पान दान कर लीन्हे कोउ शिर चँवर ढुरावत ।
कोउ सखि वीण मृदंग बजावत पावस राग सुनावत ॥
नेही नयन निहार विहारिन नयनन शयन चलावत ।
'सियवल्लभ' रसिकन सुख सम्पति दम्पति मृदु मुसुकावत ॥

पद २७८

झूलन से उमगत प्रीतम जात ।

प्यारी संग विराजत गर मिलि मन्द मन्द मुसुकात ॥
मणिन जटित सुखपाल मनोहर पान खवावत खात।
बहु सखि चँवर सु छत्र लिये कर बहु हेरत मृदु गात ॥
आये दम्पति शयन महल में प्रेम सहित बतरात।
करि आरती बिलोकि चन्द्रमुख 'सियवल्लभ' हरषात ॥

श्रीयुगलसहचरीजी-पद २७६

झमकि झूलब बालम तो संगे हिंडोरना ॥
विपिन प्रमोद बन नित बोले मोरना।
ताहू पै उमरि आवै सरयू हिलोरना ॥
सिय मुख लखि पिय नयन भै चकोरना।
झोंका न सम्हारि सके मति भई भोरना ॥
'युगलसहचरी' लखि छवि छकी जकी।
झुलबहु पिया हँसि हेरि दृग कोरना ॥

श्रीविन्दुजी – पद २८०

हिंडोरे झूलत दोउ सरकार ॥
श्रीमिथिलेशलली संग राजत श्रीअवधेश कुमार।
दामिनि लरजि गरजि घन वरसत रिमझिम परत फुहार ॥
झुकि झुकि लाल लली मुख निरखत मानत मोद अपार।
मानहु अरुण 'विन्दु' पंकज पर भ्रमर भ्रमत बहु बार ॥

पद २८१

सिय साजन का री बांका झूला।
मोतिनहार बन्दनवार हीरे हजार की कतार, बार बार छवि निहार,

रतिपति निज मद भूला ।। चम्पा चमेलि मोतिया बेलि जूही अकेलि छवि सकेलि, झेलि मेलि करत केलि, फूलों की महक से फूला ।। तापै विराजे अवधराज जनकजा समेत आज, लोक लाज त्यागि सुजन छवि हरण त्रिविध शूला ।। अरुण वरण मंगल करन दोउ पिय प्यारी के चरण, शरण 'विन्दु' संतन की सोई जीवन धन मूला ।।

पद २८२

भीजत कुंजन में दोउ अटके ।।

प्रिय पाहुने भये विटपन के पावन सरयू तट के ।
पवन झकोर लली मुख मोरति छिपति छोर पिय पट के ।।
युगल स्वरूप अनूप छटा लखि रति मनोज मन भटके ।
इक टक छवि रस 'बिन्दु' पियत दृग पल भर हटत न हटके ।।

पद २८३

दोउ जन लेत लतन की ओटैं ।

कछु पुरवाई चलत घन गरजत कछु बून्दन की चोटैं ।
डरपति सिय पट छाँह करत पिय बांधि भुजन की कोटैं ।
उत फहरत पचरंगी पगिया इत चूनर की गोटैं ।
यह छवि लखि दृग 'विन्दु' प्रिया प्रीतम के पांय पलोटैं ।।

श्रीशरणजी–पद २८४

झूला झूलो सम्हारि के लालना ।

हजार बार कहा आप मानते ही नहीं,
रहम करना गोया आप जानते ही नहीं ।

धड़कता है मेरा दिल और आप हँसते हैं,
किसी के पीर को बेपीर क्या समझते हैं।
कहवैहौ निठुर यह चालना ॥ १ ॥
भला है अब तो कहा मान लीजिये साहब,
नहीं तो होली में फिर जान लीजिये साहब,
कसर निकालेंगी सखियां जय बोलावेंगी,
'शरण' पुकारियेगा आप तब छुड़ावेंगी,
परि जैहौ सखिन के पालना ॥ २ ॥

स्वामी श्रीसीतारामशरणजी 'मधुरलता'-पद २८५

पावस घटा अटा चढ़ि लखि के बन प्रमोद सोहनियाँ रामा,
अरे रामा झुण्ड झुण्ड चलीं झूलन को कामिनियाँ रे हरी ॥
विलसत वदन अमन्द चन्द पर कारी घुंघुरवारी रामा,
अरे रामा लट लोटैं मानो पाली नागिनियाँ रे हरी ॥
नाशा वेशर राग अधर पर लटकन की लटकनियाँ रामा,
अरे रामा जियरा शाले कमर पड़ी करधनियाँ रे हरी ॥
गति गयन्द गामिनियाँ छमछम बाजैं पग पैजनियाँ रामा,
अरे रामा कुच नितम्ब के भार लंक लचकनियाँ रे हरी ॥
सरस हिंडोल शाल लखि बलि बलि जाहिं सबै भामिनियाँ रामा,
अरे रामा रस वरसत जब पिय भुज गहि लपटनियां रे हरी ॥
तीन ग्राम स्वर सप्त अलापहिं 'मधुर' साज बाजनियां रामा,
अरे रामा मानहु मूरति धरे फिरे रागिनियां रे हरी ॥

पद २८६

आज के बिछुड़े न जाने कब मिलेंगे।

आयगा कब सुखद सावन रसिक मनहर,
सजल घन रस झरत झरना शीत मृदुतर॥
मोर शोर अथोर दामिनि दमक घन पर,
हरित भूमि लता वितान भरे सरित सर॥
लाड़िली के साथ लालन मधुर झूलन कब झुलेंगे॥आज०॥
आज से फिर दिन गिनेंगे भक्त प्रतिपल,
ब्याह, होली, चैतनौमी आदि उत्सव॥
फूल बँगले की छटा को देखते ही,
मधुर पावस आगमन होगा अवध पर॥
विरह पावक से जले नव कंज मानस तब खिलेंगे॥आज०॥
मास भर सद्‌गुरु सदन रस रंग वरषा,
तीज की शुभ रात सबका हृदय करषा।
प्रात सरयू तट अघट पर वरसि रसरंग की बहार,
आज भी आँखों समाई है वही झूलन विहार॥
श्रीजानकी वर वाग में फिर आप जानें कब मिलेंगे॥आज०॥
श्रीजानकी वर वाग के नव सुमन लोभी ऐ भ्रमर,
लाड़िली नव अंग सौरभ घ्राण कर हो मत्त प्रियवर॥
नित चकोर बने रहो श्रीलाड़िली मुखचन्द का,
पानकर युग युग जिओ श्रीप्रिया कंज मरन्द का॥
'मधुर' झूलन ये सदा दृग में झुलेंगे॥आज०॥

श्रीसियाअलीजी पद २८७

धानी रंगादे मजेदार मोरा बालम ॥

धानी पहिरि पिया तोरे संग झूलब गाउब राग मलार ।
गौरांगिनि के मध्य श्याम छवि शोभा अमित अपार ॥
हम तुम बालम एक रंग है विहरब सरयू किनार ।
'सियाअली' के यही मनोरथ हो जा गले का हार ॥

पद २८८

झुलावो सजनी धीरे धीरे ।

ताल मृदंग मजीर सितारे बजाओ सजनी धीरे धीरे ।
गौड़ मलार राग सोरठ में गवाओ सजनी धीरे धीरे ॥
नूपुर छमक झमक किंकिणि की नचाओ सजनी धीरे धीरे ।
हास विलास केलि कौतुक में रमाओ सजनी धीरे धीरे ॥
'सियाअली' प्रीतम प्यारी छवि निहारो सजनी धीरे धीरे ।

श्रीवृजनन्दनजी-पद २८९

सावन सियाराम संग झूलत रेशम हेम हिंडोर हो ॥

सियाजू मिथिला दिशि को झोंकत राम अवध की ओर हो ।
अपने अपने वश राखन को मानो गई लगि होर हो ॥
वदन विलोकि विलोकन वारे बोलि उठत बरजोर हो ।
सुघर सुधाकर संसृति सुख प्रद सुभग सूर इक ठोर हो ॥
झूला झूमि झूमि पूरब को औ पश्चिम की ओर हो ।
छन प्रभात छन संध्या की छवि छाय रहे छिति छोर हो ॥
शोभा देखि देखि दोऊन की नारी नरहूँ विभोर हो ।

विहँसि उठत जिमि साँझ कुमुदिनी खिलत कंज बन भोर हो ।।
मधुर मल्हार मेघ की तानै सुनि आनन्द अथोर हो ।
उठी अलौकिक प्रीति प्रेम की दम्पति हिये हिलोर हो ।।
प्रकृति पुरुष तन नील पीत पर जनु बिजुरी घनघोर हो ।
दरशन करि नाचन लागत हैं 'वृजनन्दन' बनमोर हो ।।

समदावन-पद २६०

गुनि गुनि गनि गनि दिवस वितैलियै, से दिन आज पूरि गेल ।।
अब त बरस भरि तरसि तरसि रहबै, शोचि दृग आँसू बहि गेल ।
अली सब रूप रस रसिक चकोरी तोर, बिन देखे कल नहिं लेल ।।
अब तो अरज एक तोहि सँ हो प्राणधन, अरुझि झुलू एक बेर ।
सुरझू जनि पिय अलिन समाज बिच, रमकहु साँझ सवेर ।।
यही झाँकी लय पिय नैनन में झुलियौ, अब पिय करियौ न देर ।
झुकि झुकि झमकि झुलहु पिया-प्यारी हिय, दृग भरि निरखब फेर ।।

श्रीश्रीकरजी-पद २६१

प्यारी पिया संग झूलै, उनये घनघोर ।।
डारे गरे दोउ बहियाँ, गरे दोउ बहियाँ, झोंकत झकझोर ।
सखियाँ झुलावैं गावैं, झुलावैं गावैं, बिच बिच बोलें मोर ।।
झोंकन चलत पुरवैया, चलत पुरवैया, फहरत पट छोर ।
युवती झरोखन लागीं, झरोखन लागीं, 'श्रीकर' तृण तोर ।।

श्रीमनमोहनजी पद २६२

रमके रितु पावस सजनी बहेला पवनमाँ हे ।
प्रिया प्रीतम संग संग झूलत झुलनमाँ हे ।।

सखियाँ झुलावैं दै दै प्रेम झोंकनमाँ हे।
तन मन धन वारैं लखि रूप युगलनमाँ हे॥
प्रिया मुख लखि पिय मन ललकनमाँ हे।
रसिक जन मन हर लीन्हें भुज अंशनमाँ हे॥
बैठे वितान बिच जोति चमकनमाँ हे।
प्यारी दामिनो दुति हरतीं पिया श्याम घनमाँ हे॥
सावन सरस वन संत मन फुलनमाँ हे।
परम पुनोत सरि सरयू कुलनमाँ हे॥
प्रेमिन चकोर चाहे चन्दमुख दरशनमाँ हे।
'मोहन' लखि मुसुकैं मनमोहन सजनमाँ हे॥

पद २९३

झमकि दोऊ झूलैं रे हिंडोरवा॥
रतन जड़ित शुचि सुभग हिंडोरवा, रेशम रजु छोरवा।
रिमझिम रिमझिम सावन की बदरिया,
से चारों ओरिया बोलैं रे बन मोरवा॥
झमकि झुलावैं सखि गावैलीं कजरिया,
निहारैं लागीं आपन री चित चोरवा॥
'मनमोहन' के प्राण सजीवन, सुफल अब भेलै रे दृगकोरवा।

पं० श्रीरामदुलारीशरणजी 'रूपलता' पद २९४

प्यारी झुलें री आली प्यारे झुला रहे हैं।
रेशम के डोर ऐंचत श्रम विन्दु छा रहे हैं॥
झीने वसन सिया के फहरात झोंकने पर।

पिय कंजकर सँवारे मन्मथ लजा रहे हैं ।।
भुज अंश धारते वे क्या शौक से छबीले ।
गाना सुना सुनाकर प्यारी रिझा रहे हैं ।।
हँसती हैं मैथिली जब सन्मुख पिया के होकर ।
लखि 'रूपलता' प्रीतम बलिहार जा रहे हैं ।।

पद २६५

आज बालुम गिर गई मेरी नाक की नकबेशरी ।
अब झूलन की शौक मुझको है न उर में लेश री ।।
ये जनकपुर के सुनारों थी बनाई प्रेम से ।
अब न ऐसी बन सकेगी लाल कौशल देश री ।।
तव झुलन की झोंक लालन नागरी को सह सके ।
देख लो साड़ी हमारी ध्वंश नागिन केश री ।।
जोर झूलन झोंक से तरफर जिगर करते ललन ।
'रूपलता' अब ना झूलूँगी संग ते अवधेश री ।।

श्रीशत्रुहनशरणजी 'रसकान्तिलता'-पद २६६

झूलन में आज सज धज के युगल सरकार बैठे हैं ।
अलिन मन मोहने मानो सुछवि शृँगार बैठे हैं ।
युगल मुखचन्द हेरन को सभी आँखें चकोरी हैं ।
परस्पर में प्रिया प्रीतम बने गरहार बैठे हैं ।।
मजे से झूलते झूला कभी मचकी भी लेते हैं ।
रसीली मैथिली संग में रसिक सरदार बैठे हैं ।।
मधुर मुसुकाय सुनते हैं सरस संगीत सखियों के ।

गुणों पै दाद भी देते सजन दिलदार बैठे हैं ॥
कृपामय नयन कोरों से विहँसि हँसि हेरते दोनों ।
'लतारसकान्ति' के हियके सकल सुख सार बैठे हैं ॥

तिरहुत—पद २९७

देखु हे नवेली आली झूलन बहार ।
नवल किशोरी संग नवल कुमार ॥
नवल कंचन वन नवल हिंडोल ।
चातक कोयल केर नवल सुबोल ॥
उमड़ि आयल नव घटा बेसुमार ।
चपला चमकि परे नवल फुहार ॥
नवला नारिक तहँ नवल जुटान ।
नव साज लय गावे नव नव तान ॥
'लतारसकान्ति' फूलि अंग न समाय ।
नव सुख पावि लाल लली के झुलाय ॥

तिरहुत—पद २९८

नहुँ नहुँ झुलू पहुँ नवल हिंडोल ।
टूटल लली क गरहार अनमोल ॥
हमर स्वामिनी छथि बड़ सुकुमारि ।
एते जोर झोंका नहिं सकती सम्हारि ॥
खसल भूषण सुवसन उधियाय ।
डर सँ ललीक मुख कंज कुम्हिलाय ॥

किय नै मानै छी पिय रसिक सुजान।
'लतारसकान्ति' क विनय करु कान॥

समदावन-पद २९९

सिया के सजन के झुलाई लियौ हे सजनी सावन वितल चलि जाय।
सावन समान सुख अनत न पायब जेहि जोहि जियरा जुड़ाय॥
युगल ललन विहँसन गर लपटन भूलन भूलन मनकाय।
पान पत्रावन लट सुरझावन तजि किछु आन न सोहाय॥
भूलन-समाज संग सिय पिय हिय बसि विलसहुँ सुरुचि सदाय।
सावन-गमन तन राखन के 'कान्तिलता' नहिं किछु अपर उपाय॥

झूला विसर्जन आरती-पद ३००

आरती भूलन की कीजै, मधुर छवि नयनन लखि लीजै॥
लली लालन राजै भरि प्यार, सु नख शिख सजे सुभग शृँगार,
मदन मद तजै, सूर शशि लजै, डोल छबि छजै, बलैया बार२लीजै॥
नींद बश कबहुँ कबहुँ झुकि जात, सखिन तन हेरि सकुचि मुसुकात,
विहँसि जब जोहैं, नयन मन मोहैं,
धरै धीर को है, सखिन हिय प्रेमवारि भीजै॥
अरुण अंखियाँ सोहैं अलसात, अंगैठी लै लै के जमुहात,
अधिक निशि भूले, प्रेमवश भूले,
परम सुख मूले, निछावर तनमन करि दीजै॥
भूलन की झाँकी तजी न जाय, नयनमाँ अधिक अधिक ललचाय,
प्रेम रस रसै, युगल जो लसै,
उर अन्तर बसै, तबहिं 'रसकान्तिलता' जीजै॥

परिशिष्ट भाग–कवित्त

मेघ घहरायो छन जोति छहरायो,
बक पांति बहरायो मोर पंख फहरायो है।
बारि बरसायो इन्द्रचाप दरसायो,
चातकन तरसायो सरितान सरसायो है॥
दादुर बुलायो उर आलिन फुलायो,
सियाराम को झुलायो मद काम को भुलायो है।
भूमि हरिआयो 'रसरंगमणी' गायो,
मनभावन को भायो आयो सावन सुहायो है॥१॥
वरषत वारी घटाकारी रसरंगमणी,
कियो सिया प्यारी वैन पिया सो उचार है।
करिये तैयारी राज रसिक विहारी संग,
सखिन सुखारी होत हमहूँ तैयार हैं॥
झमकि झुलावो रंग रमकि बढ़ावो,
जौक जमकि जमावो गावो सावन मलार है।
सरयू के कूला बन फूले सब फूला,
मोद मूला अनुकूला आई झूला की बहार है॥२॥
सावन में अधिक सोहावन अवधपुर,
रिमिझिमि वरसैं जलद जल जूटि जूटि।
पावनि अवनि रमणीय राजैं हरी हरी,
वारी भरी क्यारी चहूँओर चलीं फूटि फूटि॥

जानि समय अनुकूल सखिन सोहाग मूल,
झूलत हिंडोर सीताराम सुख लूटि लूटि ।
देखि 'रसरंगमणी' दम्पति की शोभा घनी,
लाजैं झषकेतु झषमारैं शिर कूटि कूटि ॥३॥
कारे कारे घन नभ दरसत प्यारे प्यारे,
वरसि गये ते अबै वरसत फेरि फेरि ।
हरी हरी भूमि हरी हरी रहीं लता झूमि,
बोलत विहंग मानो मैन मंत्र टेरि टेरि ॥
लोनी लोनी ललना सलोनी राग गाय गाय,
नाचैं मोद माचैं लली लालन को घेरि घेरि ।
रमकि रमकि रघुवीर 'रसरंगमणी',
सरयू के तीर झूलैं सिया मुख हेरि हेरि ॥४॥
छाय छाय आये चहूँओर घनघोर करि,
सोर जोर बरसैं मधुर झरि लाय लाय ।
लाय लाय गलबांह राजत नवेली नाह,
सखियाँ झुलावैं झुकि झुकि नाचैं गाय गाय ॥
गाय गाय बोलैं मानो कोकिला मधुप कीर,
सरयू के तीर तरु फूले नीर पाय पाय ।
पाय पाय पान मुसुक्याय रघुराय सीय,
झूलैं 'रसरंगमणी' मन मोद छाय छाय ॥५॥
सावनी सुतीज मोद बीज 'रसरंगमणी'
मनीकूट कुंज बीच फूले तरु सावनी ।

सावनी अवनि हरी सावनी सरयु भरीं,
सावनी मधुर झरी मेघ बरसावनी ॥
सावनी सु सारी धारी भामिनी समूह गावैं,
सावनी सु राग नृत्य गति दरसावनी ।
सावनी पोशाक राम स्वामिनी सँवारि झूलैं,
सावनी सु झूलनि सनेह सरसावनी ॥६॥
बाग वृक्ष वेली झूलैं संग की सहेली झूलैं,
सरयू तरंगन सों झूलैं मोद मूलहीं ।
तुर्रा अनमोल झूलैं कुन्डल सु लोल झूलैं,
अलक कपोल झूलैं दृग झूलि फूलहीं ।
बेनी पीठ पर झूलैं बेसरि अधर झूलैं,
झूलनी सुघर झूलैं कर्णफूल डूलहीं ।
सबहीं झुलाय झूलैं झूलन में सीताराम,
यों ही 'रसरंगमणी' नैनन में झूलहीं ॥७॥
आजैं चहुँओरे नभ गाजै घनघोरे तोय,
त्याजै थोरे थोरे बोलैं मंजु मोरी मोरे हैं ।
सरयू हिलोरे जहाँ लेहिं चित चोरे तहाँ,
युगल किशोरे लसैं श्यामल सु गोरे हैं ।
यंत्रन टंकोरे सखी नाचैं अंग मोरे,
'रसरंगमणी' जोरे जस गावैं ताल तोरे हैं ।
मैन छवि छोरे हंसैं हेरि नैन कोरे,
सीताराम रस बोरे आज झूलत हिंडोरे हैं ॥८॥

रचे चारु चामीकर दण्डन के दोनों ओर,
चन्द्रकला चन्द्रप्रभा चँवर चलावती।
विमला व्यजन बीजैं छैमा छपानाथ ऐसो,
सीता रघुनाथ माथ छत्र छटा छावती।
सहजादि सखी साज लीन्हें 'रसरंगमणी'
सुभगा सुभग राग सावन की गावती।
झुकि-झुकि झमकि-झमकि झोंकि झोंकन सों,
अली लली लालन को झूलन झुलावती ॥९॥
उत घन दामिनी सो दुरत सपेद होत,
इत सीताराम दुति थिर एकरस हैं।
उत वारि बरसै सो कबहुँ अधिक कम,
इत जन रुचि सम सुख के बरस हैं॥
उत छिति हरित औ सरित भरित इत,
हरी सहचरी चारु नद गान जस हैं।
उत सुखी मोर 'रसरंगमणी' इत सोहैं,
सावन ते सिया मन भावन सरस हैं ॥१०॥
पावस की फौज जामें कोकिला निशान लीन्हें,
बान तौ बलाहक कर काम अगिन जोर है।
चोवदार चात्रिक चहुँओर शोर मोर करैं,
जोरन सों दादुर दमान कोलै दौर है॥
घूमि घूमि घटा घेरि अटन मध्य कामिनी सी,
दामिनी सी ओट चोट काम कोट टोर है।

घायल से घूमि झूमि विरहिनि बेहाल कीन्ही,
'प्रिया सखी' सिया श्याम उपजी मरोर है ॥११॥
आली री अंदोल आजु विपिन प्रमोद माँझ,
सहित अलिन्ह झूलैं नवल किशोर हैं।
शीतल कदम्ब छाँह छाये द्रुम फूलन से,
दादुर मयूर पिक चारों ओर शोर है॥
मधुप गुंजारैं आली गावती मल्लारें मिलि,
आनन्द के सिन्धु माँझ उठत हिलोर हैं।
आली सिय रसिक सुजान प्रान प्यारी पिया,
पेखि घनश्याम तन नाचै मन मोर है ॥१२॥
सावन सहेली छवि छावन अशोक वन,
झूलन रतनगिरि शोभा अधिकाई री।
द्रुमन्ह हिंडोले आछे फूलन के झुमके हैं,
फूले फूले झूलैं दोउ फूल मही छाई री॥
पटुली पिरोजा चारु चामीकर रचे द्वार,
बने हैं अमोले डोलैं छवि सरसाई री।
नवल किशोरी लाल हरषि झुलावैं बाल,
झूमि झूमि झोंका देत रही मुसक्याई री ॥१३॥
सखिहूँ से सखी कहैं नवल किशोर लखि,
पिय घनश्याम शोभा सींव सिय गोरी हैं।
सूहे सूहे वसन लसत मृदु अंगन पै,
भूषण विचित्र लखि रति मति भोरी हैं॥

कारी घटा घूमि रही झूमि झूमि बरसत,
सरस सुगंधै भीनी पवन झकोरी हैं।
'आलीसियरसिक' कूजत अति प्रिय लागै,
कोकिला सों सारस चकोर मोर मोरी हैं ॥१४॥

येरी आजु राजनंद सियाजू सहेलि वृन्द,
हिलि मिलि झूलन रतनगिरि आये हैं।
सुरंग वसन सोहैं इन्द्रवधू छवि मोहैं,
भूषण सुदेश अंग रचिकै बनाये हैं॥
मुख में चबात पान मंद मंद मुसुक्यानि,
चन्दमुखी चितवत हियरे समाये हैं।
आली हिय झूलने अपार रंग बाढ्यो आजु,
देखि देखि दम्पति आनन्द उमगाये हैं ॥१५॥

सरयू पुलिन शुभ अलिन समेत सिया,
राघो जू झूलन रच्यो अति सुखदाई है।
हरियाई छाई चहुँओरन सुहाई भूमि,
भूमि द्रुम सुमन की सुभग ललाई है॥
कोइली करत सोर मोर चहुँ ओर जोर,
नचत मयूरी ठौर ठौर छवि छाई है।
ललित लुनाई लखि विपिन प्रमोद आजु,
नंदनादी लजत विलोकि रुचिराई है ॥१६॥

सावन की घटा घेरि आई चहुँओरन से,
मधुर मधुर शब्द सो पखावज बजायो है।

भ्रमर भन्नाय तानपूरा को सुर भरैं,
झिल्ली झिनकारि गति सितार को सुनायो है ॥
गान करैं कोकिल सुनि नाचत मयूर पेखि,
देत ताल मेढ़क यह शोभा बनि आयो है।
चलु री सखी झूलन जैए रघुराज पास,
झूलन की साज सब नवीन ही बनायो है ॥१७॥
गावत हैं बेद चारि ब्रह्मा त्रिपुरारि जाके,
नारद शारद शेष पार नहीं पावहीं।
करहिं विविध जप तप योग योगीजन,
संयम समाधि करि करि जेहि ध्यावहीं ॥
जाको अनुशासन विरंचि जग माया यह,
डहकि डहकि अग जगहिं भुलावहीं।
सोई प्यारे जानकी मनोहर सहित सिय,
झूलत नवल कुंज सखिन झुलावहीं ॥१८॥
सबुज रंग फर्स छत चँदोवा हैं सबुज रंग,
सबुज रंग भीति वापै सबुज चित्रकारी हैं।
सबुज रंग आसन सिंहासन हैं सबुज रंग,
सबुज है हिंडोला तापै सबुज पिय प्यारी हैं।
सबुज रंग भूषण औ वसन हैं सबुज रंग,
सबुज सब साज लिये बने छबि भारी हैं।
झुलावैं दुइ सबुज सखी गावें सब सबुज राग,
झूलैं सबुज रघुवर संग जनक दुलारी हैं ॥१९॥

नवल हिंडोर कुंज नये भ्रमर पुंज गुंज,
नवल रंगीले लाल प्यारी को झुलाई है ॥२२॥
श्याम कच श्याम चोटी श्याम भाल विन्दु दिये,
श्याम दृग श्याम श्याम काजर लगाये हैं।
श्याम तन सारी श्याम श्याम है किनारी तामे,
श्याम जड़तारी बेली बूटहू सजाये हैं॥
चाँदनी तनी है श्याम फरश बिछी है श्याम,
श्याम श्याम झालर श्याम लट्टू लटकाये हैं।
श्याम ही तमाल डाल झूलन रसाल श्याम,
राम अभिराम सिया श्यामा को झुलाये है ॥२३॥
सावन अब आये लाल लीन्हें सब साज लाल,
फूले बन बाग लाल लाल रंग मेह की।
बिजुली की चमक लाल बोले बन मोर लाल,
लाल लाल दादुर लाल लाल रंग गेह की॥
कंचन को खम्भ लाल रेशम की डोर लाल,
चन्दन कपाट लाल लाल रंग जेह की।
लाल शिरपेंच लाल लली की चन्द्रिका लाल,
झूले दशरथ के लाल लाड़िली विदेह की ॥२४॥
लाल है लड़ैती लाल संग लिये सखी लाल,
झूलत हिंडोल लाल लाल घन गाज री।
चन्द्रिका किरीट लाल जामा औ पटुका लाल,
चुन्दरी कंचुकी लाल लाल सब साज री॥

मृदंग लाल ढोलक सितार लाल,
लाल मुरचंग लाल लाल बीन बांसुरी।
ललाई लाल देखिके मदन लाल,
ठाढ़े पछतात लाल लेत है उसांस री ॥२५॥
लाल लाल फूल फूले ललित प्रमोदवन,
बनि ठनि संग सोहैं लाल लाल बाल हैं।
लाल सिया सारी लाल वसन बिहारी तन,
चन्द्रिका किरीट लाल लाल उरमाल हैं॥
लाल लाल आनन में पानन की लाली लसैं,
लाल मुसुक्यानन सों करत निहाल हैं।
लाल लाल झूलन में सरयू के कूलन में,
हूले 'रसरंगमणी' झूलें लली लाल हैं॥२६॥
चहुँओर ललित हिंडोरे लाल बालहू के,
राजै मध्य रंग भीने श्यामा श्याम लाल हैं।
चुन्दरी सुरंग लाल प्यारी अंग अंग लाल,
भूषण विचित्र लाल संग रंग लाल हैं॥
मन्द मन्द हँसनि हिंडोरे रंग झूलने में,
लाल बाल हेरनि सौं करत निहाल हैं।
लटपटि पाग लाल समर उमंग लाल,
लाल मई बाल कैधौं बाल मई लाल हैं॥२७॥
आली पिक कोकिला कलापि किलकारैं सोर,
सोरैं नभमाली आली काम जोर जंग में।

अंग मुख लाली लाल बसन कुसुंभि लाल,
नवल किशोरी लाल लाल बाल संग है ॥२२॥
छूटै पेंच लाली पाग चुन्दरी किशोरीजू की,
अति सुख लाली खिली अमित अनंग नैं।
रूप गुण जोबन कला की कण्ठ ताली संग,
सावन निकुँज झूलैं प्यारी लाल संगमें ॥२८॥
लाली है लतिका तमाल ताल बकुल वृन्द,
देखत अनंद होत पोत मुनि लाल हैं।
लाली अति सावनी सोहावनी सुरंग फूल,
कल्पतरु कदम्ब मूल केतकी रसाल है॥
लालन के लाल बाग बेदिका विचित्र लाल,
अतिहिं विसाल तामें झूला परयो लाल है।
लालही वितान फरस झूलामणि रचित लाल,
लाल बालमध्य झूलैं सिया रघुलाल हैं ॥२६॥
फूलन के खम्भा पाट पटरी सुफूलन की,
फूलन के फुदने फुदे हैं लाल डोरे में।
कहैं पदमाकर वितान तने फूलन के,
फूलन के झालर से झूलत झकोरे में॥
फूल रही फूलन फुलवारी तहँ फूल के ही,
फरस बिछे हैं फूल फूल कुंज खोरे में।
फूल झरी फूल भरी फूल जरी फूलन में,
फूल ही सी फूलि रही फूल के हिंडोरे में ॥३०॥